loveguruwb@yahoo.com

koi bhi haryana aur delhi ki ladki  mujse chudna chati hain to muje mail karen or sath hi apna naam , contact no, address , age ,

सुनीता राकेश शिशिर कुमुद रजनी रूपेश संगीता अग्रवाल मिसिज मलहोत्रा

बुर  कमर ऊपर नीचे जीभ से सहलाना मसलना मदहोश मस्त चूचियॉ कमर कौ पैर से जकड़ना शट लगाना सुपाड़ा हथियार हॉट फच्च की आवाज नितम्ब गुलाबी सूजे ओंठ चूत की पंखुड़ियॉ  क्लिटोरी लौड़ा हमारी झॉटें पोते चूतड़ों से टकराये चूत की गहराइयों तक मेरी कमर को कस कर अपने पैरों के बीच फॅसा कर भींच लिया था चूत सिसकने लगी  घुटने के बल बैठने चूतड़ों को दबा देती  धकाधक लंड पेलना जोवन  आह उइ चूत फड़क रही थी चूत की ज्वालामुखी ने लावा छोड़ दिया संगमरमरी वदन भगनासा

**1**

सुनीता

मैं सुनीता हूॅ। कदकाठी से अच्छी हूॅ। सही जगह पर सही मॉस है। वहुतों से सुना है कि मेरे वदन में बहुत आकर्षण है।  चाल ढाल में ग्रेस है। कई लोगों की निगाहें अपनी ओर उढती हुई देखती हूॅ।उम्र है जब सेक्स  की तरफ खुलापन आ जाता है और झुकान बढ जाता है।अच्छे घर से हूॅ और अच्छे घर में ब्याही गई हूॅ।पति राकेश का अच्छा कारबार है।एक जानी मानी कालोनी में दूसरे माले के अपने फ्लेट में रहती हूॅ। पहनने ओढने का शौक है। मेरा विश्वास है कि हर स्त्री को सज सॅभर के रहना चाहिये। मैं सैक्स  से सन्तुष्ढ हूॅ।पति हफ्ते में कम से कम दो बार चुदाई करते हैं।कभी मेरी तबियत होती है तो पहल करके चुदवाती हूॅ।

सामने ही गली के उस पार मिस्टर और मिसिज मलहोत्रा का दुमंजला घर है।सयोन बच्चे होने के बावजूद भी मिसिज मलहोत्रा कितनी सजी धजी रहतीं हैं। साथ बाले फ्लेट की मिसिज अग्रवाल की उम्र भी कम नहीं है । एक बड़ा लड़का है लेकिन अब भी छरहरी और चुस्त हैं।। मेरे नीचे फ्लेट में मेरी जिठानी रहतीं हैं। उम्र ज्यादा नहीं है पर कैसी ढीली ढाली हैं न बनाव की ओर ध्यान न कपड़ों की परवाह।

करीब एक महिने से ऊपर की खाली मंजिल में मलहोत्रा लोगों ने एक किरायेदार रख लिया है।बेटी की शादी हेा गयी है और बेटा पढाई के लिये बाहर चला गया है।किरायेदार दो ही जने हैं।सामने के फ्लेट में होने से उनकी जोर से कही बातें साफ सुनायी देती हैं।पति का नाम शिशिर है।लम्बा और सुदर्शन है।सुना है एम बी ए है किसी प्राईवेट कम्पनी में बडा आफिसर।पत्नि का नाम कुमुद है।वह भी लम्बी और सुन्दर है।बैंक में काम करती है।

इधर कुछ दिनों से मैं देख रही हूॅ कि शिशिर मुझे घूरता रहता है।रात में जब भी मेरी चुदाई हेाती है राकेश अन्दर ही झड जाताा है।मैं अपनी चड्ढी से ही उसका वीर्य पोंछ लेती हूॅ।सुबह जब उठती हूॅ तो बिना चड्ढी के ही पेटीकोट पहिना होता है।कभी कभी तेा  ब्रेसियर भी नहीं डाली होती है।जल्दी जल्दी ब्लाऊज डाला होता है जिस में से मेरी चूचियॉ दिखाई पड़तीं हैं।सुबह राकेश को जाने की जल्दी होती है। उसी हालत में उसका नास्ता बनाती हूॅ फिर तैयार हेाती हूॅ।शिशिर जब उसके बैडरूम से लगी झत पर आकर खड़ा होता है तो सामने ही मेरा किचिन पड़ता है। उसका इस

loveguruwb@yahoo.com

तरह मुझे अथनंगी हालत में देखना बहुत खराब लगता है। कई बार सोचा कि मिसिज मलहोत्रा से शिकायत करूँ। थोड़ी शर्म खाके रह जाती हूँ। उस दिन रात में पहल करके चुदायी करायी थी लेकिन राकेश बहुत ही जल्दी झड़ गया। सुबह उठी तो तबियत शान्त नही हुई थी बदन में शुरूर था। सामने देखा तेा शिशिर एक टक घूर रहा था। उस समय उसका इस तरह देखना बुरा नही लगा। सोचा मेरी बला से देखने दो। मैं भी ठीक उसके सामने बैगर चड्ढी और ब्रेसियर के पेटीकोट ब्लाउज में बैसी ही खड़ी रही। देखती क्या हूँ कि उसने गाउन के बटन खोल कर दोनों हाथों से सामने से गाउन खोल दिया। उसने कुछ भी नही पहना था। सामने उसका लंड तन्ना के खड़ा था। बदन उसका बहुत सुडौल था। पेट बिल्कुल भी नही निकला था। लंड राकेश से काफी बड़ा और मोटा था। गर्म तो मैं थी ही आदतन मेरा हाथ मेरी चूत पर चला गया। पेटीकोट के ऊपर से सहलाने लगी। अचानक होश बापिस आ गया। बड़ी ग्लानि हुई। खीजकर अन्दर भाग गयी। मेरी सॉस बड़े जोरों से चल रही थी। तबियत फिर भी न मानी। उसके लंड को फिर देखने के संमोहन को न रोक सकी। बैडरूम की खिड़की से छुपके देखा। मेरे अचानक भागजाने से उसका मुँह खुला का खुला रह गया था। नीचे से कुछ आवाज आयी और वह गाउन बंद कर नीचे चला गया।

**2**

सुनीता

उस घटना के बाद मैं शिशिर के सामने नहीं गयी। मन में चोर होने से किसी से कहने की हिम्मत नहीं हुई। मेरी झिझक भी खत्म हो गयी। पेटीकोट में घूमती रहती। कभी कभी तो जानबूझ कर और उ घाड़ लेती। कभी ऐसा पोज बनाती कि चूचियॉ चूतड़ या यहॉ तक कि चूत उभर के सामने आ जाये। छुपछुप करके देखती कि वह नंगा तो नहीं हो गया है। इस तरह के खेल में मुझे मजा आने लगा था। इन दिनों मैं राकेश से चुदवाती भी बहुत थी।

एक सुबह शिशिर ने छत पर खड़े खड़े ऊँची आवाज में कहाः आज रात दस बजे तमाशा होगा खिड़की खोल के रखना। बात जानबूझ के कही गयी थी। मैने निश्चय कर लिया नही खोलूँगी राकेश के सामने कुछ ऐसी बैसी बात हो गयी तो। राकेश साढे दस के करीब खर्राटे लेने लगा। मुझ से नहीं रहा गया। मैने शिशिर के बैडरूम के सामने की खिड़की खोल दी। ढीक सामने उसकी खिड़की खुली थी। खिड़की के सामने पलंग पड़ा हुआ था जिसका सिरहाना खिड़की की ओर था। पलंग पर नंगी कुमुद लेटी थी। व्ह खिड़की की तरफ नहीं देख सकती थी। उसकी चूचियॉ साफ नजर आ रहीं थी छोटी सख्त बादाामी फूले हुये निपिल। उसने अपनी टॉगें चौड़ा रक्खीं थीं। टॉगेां के बीच में पूरा नंगा लंड ताने शिशिर बैठा था निगाहें खिड़की पर जमीं हुई। मैं खिड़की खोल कर पलंग पर लेट गयी। उसकी खिड़की मेरी ऑखों के सामने थी। उसने सीधा मेरी ऑखों में देखा और हाथ से लंड पकड़ कर कुमुद की चूत में पेल दिया। कुमुद ने अपनी चूत उठा कर पूरा ले लिया। शिशिर सीधा मेरी ऑखों में देख रहा था और कस कस करके कुमुद की चूत में पेल रहा था। चोद कुमुद को रहा था लेकिन मुझे लग ऐसा रहा था जैसे चोटें मेरे में पड़ रहीं हों। कुमुद भी हर चोट पर अपनी चूत

loveguruwb@yahoo.com

आगे कर देती थी। पता नहीं मेरा हाथ कब मेरी चूत पर पहुँच गया। बगल में पति लेटा था और मैं साड़ी उठाये चड्ढी एक तरफ किये अपनी चूत में उँगलियाँ अन्दर बाहर कर रही थी। जैसे शिशिर की रफ्तार बढने लगी मैं इस बुरी तरह से अपने को ही चोदने में लीन हो गयी कि शिशिर के झड़ने के पहले ही मैं खलास हो गयी। उस रात जब में सोयी तो ऐसा लगा शिशिर द्वारा चोदी गयी हूँ।

**3**

सुनीता

कल रात की बात पर बड़ा ताज्जुब हुआ। ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि अपना हाथ चूत पर रखा हो। जरूरत ही नहीं पड़ी थी। लेकिन शिशिर पर नाराजी नहीं थी। उसके बाद तो तबियत होती वह सब फिर देखने को मिले। रात में खिड़की खोल खोल के देखती लेकिन उसकी खिड़की बन्द होती। शायद उसने यह सब करते देख लिया। एक सुबह फिर ऊँची आवाज में जैसे अपने से ही बात कर रहा हो बोला "पहले तमाशा दिखाओ फिर देखने को मिलेगा"। सोचा मियाँ बड़े ऊँचे उड़ रहे है। भूल जाओ मैं यह सब करूँगी। मैं अपने रूटीन में लग गयी। शिशिर अब इतना घूर घूर के नही देखता था। अच्छा लगने कि जगह कुछ सूना सा लगता था। जब अपने अन्दर डलवाती थी तो शिशिर की बात की सोच कर लाल हो जाती थी और बड़ी रोमाँन्चित भी।

उस दिन राकेश का जन्मदिन था। सुबह से ही मन प्रसन्न था। शाम के सज सँभर के बाहर खाना खाने जाते थे और रात में राकेश तबियत से हेमं चोदता था। शिशिर को झत पर देखा तो मन ने जोर मारा और उसको दिखा कर मैने खिड़की खोल दी जैसे रात का संकेत दे दिया। सोचा आज देखो हमारा मजा।

रात को देर से हम लोग लौटे। मेरी खिड़की और सामने शिशिर की खिड़की खुली हुई थी। शिशिर अपनी तरफ का लैम्प जला कर कुछ पढ रहा था। कुमुद शायद सो गयी थी। अन्दर आते ही राकेश ने मुझे बाँहों में ले लिया और मेरे ओंठों पर कस के अपने ओंठ रख दिये। सामने मैने देखा शिशिर उठ कर खिड़की पर खड़ा हो गया और उसने अपनी लाइट आफ कर दी। मुझे जोश आ गया। मैं राकेश को साथ लिये पलंग पर आ गिरी। राकेश ने ब्लाउज के ऊपर ही मेरी दाँये स्तन पर अपना मुँह रख दिया और बाँयें स्तन को मुट्ठी में जकड़ लिया। मैने पैन्ट के ऊपर ही उसके लंड पर हाथ रखा और सहलाने लगी। उसको जैसे करैन्ट लग गया हो। उसने जल्दी से मेरे ब्लाउज के बटन और ब्रेसियर के हुक खोल डाले। मेरी भरपूर गोलाइयाँ बाहर निकल आयीं जिन पर मुझे बड़ा नाज था। इसके पहिले कि वह एक चूची को मुँह में लेता मैने कहा कि इतनी अच्छी साड़ी पहनी है इसको तो उताार दो। राकेश के ऊपर बहसीपन सबार था बोला साड़ी में इतनी खुबसूरत लग रही हो आज साड़ी में ही करूँगा। इसके साथ ही उसने मेरी साड़ी और पेटीकोट को पूरा उलट दिया। इसके पहले कि बह मेरी पैण्टी उतारता मैने उसके पैण्ट के बटन खोल डाले और एक झटके में अण्डरवियर

loveguruwb@yahoo.com

समेत पैण्ट उतार फेंका। उसका एकदम तना हुआ लंड स्प्रिंग जैसा बाहर निकल आया।कमीज फेंक कर वह मेरे ऊपर आा गया।मुँह में एक चूची ले ली और निपिल चूसने लगा।मैं पूरी तरह पिघल चुकी थी।यह जानकर कि शिशिर यह सब कुझ देख रहा है मैं बहुत ही उत्तेजित हो गयी थी। मेरी चूत बुरी तरह रिसने लग गयी थी।मैंने कस के उसका सिर अपनी चूची पर और दबा लिया और नीचे हाथ डालकर लंड पकड़ लिया।

कस के मुट्ठी लंड पर फेरते हुये बोली ''अब डालो भी न''

ऊपर उठ कर राकेश ने मेरी पैण्टी उतार फेंकी।मैने टॉगें चौड़ी कर लीं।चिकनी सुडौल टॉगों के बीच अब मेरी चूत मुँह खोले इन्तजार कर रही थी।एकदम चिकनी मैं पूरी तरह साफ करके रखती हूँ

जब राकेश ने लंड का अगला सिरा चूत के मुँह पर रखा मेरी ऑखों के सामने शिशिर का चेहरा आ गया कि कैसे मुँह बाये वह सब कुछ देख रहा होगा।चूत में फुरेरी हो आयी।राकेश ने मेरी दोनों गोलाइयों को दोनों हथेलिया में कस के जकड़ लिया और लंड को अन्दर पेला।मेरी चूत एकदम गीली थी।उसका पूरा का पूरा एकदम घुस गया।पहले तो अन्दर जाने में थोड़ा समय लगता था।मेरे मुँह से 'शी' निकल गयी।उसकी छाती के दोनों ओर हाथ डाल कर उसको कस के जकड़ लिया।

पूरा बाहर करके राकेश ने लंड फिर पेल दिया।मैं कह उठी 'आह'

अब की बार वह लंड चूत के बाहर दूर तक ले गया और एकदम जोर लगा के घुस गया।चूत के ऊपर उसकी जड़ धप्प से पड़ी।'आ आ ह' कह उठी।

दो तीन बार उसने ऐसा ही किया।मेरा मजा बढ रहाा था 'आ ह' ऊँची हो रही थी।

अचानक वह बोला मैं झड़ रहा हूँ और व्ह मेरे ऊपर ढेर हो गया।ढेर सारा गाढा पदार्थ चूत में भर दिया।कभी कभी राकेश के साथ ऐसा हो जाता था।

मुझे यह सोच कर झेंप सी हो रही थी कि शिशिर क्या सोचता होगा।

## 4

## सुनीता

अगले दिन शनिवार को मिसिज मलहोत्रा ने एक पार्टी रखी थी। पास पड़ोस के आठ दस लोगों को बुलाया था। शिशिर से मेरा और राकेश का परिचय मिसिज मलहोत्रा ने कराया।कितनी अजीब बात थी हम लोगों को एक दूसरे के अंदर का सब कुछ मालूम था और एक दूसरे को जानते तक न थे।शिशिर की ऑखों में शरारत झॉक रही थी।मैं दबंग होने के बाबजूद भी झिझक रही थी।मिलते ही राकेश और शिशिर एक दूसरे को पसंद करने लगे थे।ऐसे घुल मिल के बातें कर रहे थे जैसे अरसे से एक दूसरे को जानते हों।

शिशिर और कुमुद का स्वभाव सरल था।आसानी से सबसे घुल मिल गये।थोड़ी ही देर में एक ग्रुप

loveguruwb@yahoo.com

सा बन गया जिसमें राकेश मैं शिशिर कुमुद मिसिज अग्रवाल और मिसिज मलहोत्रा सामिल थे। मिस्टर अग्रवाल अभी आये नहीं थे। पार्टी में आना जाना उनका ऐसा ही होता था हर समय धंधे की धुन रहती थी। मिस्टर मलहोत्रा मेजमानी में सबसे मिलने में ही व्यस्त थे। ग्रुप में खुब हॅसी मजाक चल रहा था। जोक्स सुनाये जा रहे थे जिनमें सेक्स पुट था। मिसिज अग्रवाल बढ़ चढ़ के भाग ले रहीं थीं। मिसिज अग्रवाल कुछ कुछ भारी वदन की गदरायी जवानी की प्रौढ औरत थीं। पीलायी लिये गोरा रंग फैले हुये चूतड़ जो चलते समय बड़े मादक तरीके से हिलते थे। और भरी हुई खरबूजे सी छातियॉ। सेक्स की बात करतीं थीं तो नथुने फड़कने लगते थे छातियॉ और फैल जातीं थीं। सब एक दूसरे को सहज तरीके से संबोधित कर रहे थे। राकेश कुमुद को भाभी कह रहा था। केबल मैं और शिशिर एक दूसरे को सीधा संबोधित नहीं कर रहे थे। शिशिर अकेले मौके की तलास में था जो नहीं मिल पा रहा था और न हीं मिल पाया। पार्टी से जाते समय उसने मेरी ऑखों में झॉका उसके चहरे पर निराशा थी। जाते जाते उन लोगों को राकेश ने दूसरे दिन अपने यहॉ निमंत्रित कर लिया।

जिस मौके की उसे तलाश थी दूसरे दिन उसको मिल गया। अकेले पाते ही वह मेरे से चिपट गया। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। घबड़ा के मै पीछे हट गयी। मेरा चेहरा पीला पड़ गया। मेरा चेहरा देख उसने एकदम से मेरा हाथ छोड़ दिया। बोला "सॉरी मैने सोचा तुम मेरा लेना चाहतीं हो"।

उसके बाद उसका बर्ताव एकदम शालीन हेा गया और सहजताा से उस शाम से वह मुझे भाभी कह कर बुलाने लगा। दोनों घरों में बहुत निकटता हो गयी। अक्सर मिलना होने लगा। लेकिन मैं अभी तक उसे ठीक से संबोधित नहीं कर पा रही थी।

ग्रुप भी आये दिन मिलने लगा। कभी मलहोत्रा के यहॉ कभी अग्रवाल के यहॉ कभी शिशिर के यहॉ तो कभी मेरे यहॉ। अब खुल कर सेक्स की बातें होने लगी थीं। मिसिज मलहोत्रा जितनी दुपा छुपा के कहतीं थीं मिसिज अग्रवाल उतनी ही साफ साफ जबान में जिनमें हाव भाव और चेष्टायें भी सामिल होती थीं। राकेश और शिशिर अब बेधड़क बोलने लग गये थे जिसमें करने लग गये थे। कुमुद अथ सुनी सी करती थी लेकिन मै बडे ध्यान से सुनती थी। मुझे बड़ा ही आनन्द आता था।

शिशिर सचमुच में मेरा और अपनी बीवी का बड़ा ख्याल रखता था। दोनों परिवार साथ जाते तो मेरे उठने बैठने चाय पानी और जरूरतों के लिये तैयार रहता। भाभी भाभी कहता और उसी तरह मानने लगा था। एक बार ग्रुप में बैठे थे।

किसी बात पर मेरा ध्यान बटाने के लिये पुकार उठा "भाभी. भाभी"।

मेरे मुॅह से अचानक निकल पड़ा "हॉ बोलिये देवर जी"

सबने तालियॉ बजाईं "अब सही माने में देवर भाभी हुये"।

उसके बाद मैं उस देवर कह कर ही बुलाने लगी।

पहली बार की हाथ पकड़ने की घटना के बाद उसने फिर कोई चेष्टा नहीं की।

loveguruwb@yahoo.com

लेकिन अब मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मुझे वह अनजाना शिशिर ही भा रहा था। मैं उसका लंड देखने को तरस रही थी। उसके द्वारा कुमुद की चुदायी देखना चाहती थी। जब भी वह सेक्स की बात करता था मै गरम हो जाती थी। आखिर मेरे से न रहा गया।

एकदिन दबी जबान से कह दिया "देवर जी तमाशा दिखाओ न"

वह चौंक गया। देर तक मेरी तरफ देखता रहा लेकिन बोला कुछ नही।

उस रात उसकी खिड़की के पट खुले हुये थे। गयी रात कमरे की बत्ती जली तो शिशिर पलंग के किनारे नंगा खड़ा था। मोटा लंबा लंड मुँह बाये सामने तन्नाया। सामने टॉगें चौड़ी किये हुये कुमुद पलंग के किनारे पड़ी हुयी थी। उसकी चूत का मुँह खुला हुआ था। शिशिर ने झुक कर लंड उसकी चूत में लगा के जैसे ही पेला मैं धक्क से रह गयी। उधर शिशिर पेले जा रहा था। कुमुद चूत उठा उ ठा करके उसके झेल रही थी और मैं छटपटा रही थी। राकेश को जगा करके मैं अपनी चूत खोल करके उसके ऊपर सवार हो गयी। उससे कस कस कर झटके लगाने को कहा। झड़ जाने के बाद भी मैं पूरी तरह शान्त नही हुयी थी।

उसके बाद मैं शिशिर की तरफ झुकान दिखाने लगी। जानबूझ कर ऑचल गिरा देती और अपना ब्लाउज ठीक करने लगती। सिडक्टिव पोज बना देती। उसके सेक्स के जोक पर मुँह बना देती। और आये दिन 'तमाशा' दिखाने की मॉग करती।

**5**

महफिल

मिसिज अग्रवाल के यहॉ ग्रुप की महफिल जमी हुई थी। आदत के अनुसार मिस्टर अग्रवाल आ करके काम धंधे पर चले गये थे।

मिसिज मलहोत्रा का जोक चल रहा था

एक दिन अकबर बादशाह ने पूँछा ःबीरबल मिसिज अग्रवाल जैसी गोरी औरत की अन्दर की चीज क्यों काली है

राकेश बोल उठा "मिसिज मलहोत्रा तुम्हें कैसे पता कि काली है"।

शिशिर ने तुरत जोड़ा "हॉ भई यह तो मिस्टर अग्रवाल या फिर राकेश को पता है"

मिसिज मलहोत्रा भी पीछे रहने बाली नहीं थीं "हाथ कंगन को आरसी क्या ।मिसिज अग्रवाल दिखा दें अपनी"

loveguruwb@yahoo.com

मेरे को सब्र नही था बोली "अब जोक भी कहो न"

मिसिज मलहोत्रा ने आगे कहा अकबर बादशाह ने एक हफ्ते का समय दिया और कहा कि अगर न बताया तो देश निकाला।

बीरबल बड़े परेशान। उन्हें जबाव ही नहीं सूझता था।उनकी पत्नि ने यह हालत देखी तो पूँछा "आप इतने परेशान क्यों हैं"

ज्यादा जोर देने पर बीरबल ने बादशाह का प्रश्न दोहराया।सुन कर पत्नि हँसने लगी और बोली बस इतनी सी बात है। आप बादशाह से कहिये मेरी पत्नि इसका जबाव देगी।

दूसरे दिन मिसिज बीरबल अकबर के दरबार में पहुँची।बादशाह के जबाव माँगने पर उन्होंने एक जोर का चाँटा अकबर के गल पर लगाया। अकबर का चेहरा गुस्से से लाल हो गया।सब लोग सन्नाटे में आ गये।

मिसिज बीरबल बोलीं "जहाँपनाह एक चोट से ही आपका चेहरा काला पड़ गया हमारी इसको तो कितनी चोटें खानी पड़तीं हैं"।

शिशिर बोला "कितनी स्तेमाल हुई है जानने का अच्छा तरीका पता चल गया"।

मिसिज अग्रवाल भी जोक में कहाँ पीछे रहने बालीं थीं कहने लगीं 'बात उस समय की है जब मिसिज मलहोत्रा जनरल स्टोर्स को सँभालतीं थीं।ग्राहक को खुश रखने का उन्हें काफी जोश था।एक बार एक ग्राहक आया।उसे निजी चीजें खरीदना थीं।सबसे पहले उसने अच्छी ब्रेजियर माँगी।

मिसिज मलहोत्रा ने पूछा "क्या साइज है"

ग्राहक ने कुछ देर सोचा फिर चटखारे लेकर हाथ की एक एक उँगली चूसने लगा।अगूँठे को दिखा के बोला इस साइज की।

मिसिज मलहोत्रा "नहीं भई कप साइज क्या है"

ग्राहक की समझ में नही आया।

मिसिज मलहोत्रा ने कहा "देखो इधर"।फिर अपना आँचल गिरा के अपने उभार सामने करतीं हुई बोली "इतने बड़े हैं या इनसे छोटे"

ग्राहक "इस तरह खड़े नहीं होते"

मिसिज अग्रवाल आगे कुछ कहतीं उसके पहले ही मिसिज मलहोत्रा बोल पड़ीं "हाँ याद पड़ता है मिस्टर अग्रवाल आये थे। उन्होने सबसे बड़ी साइज की ब्रेजियर ली थी।लेकिन दूसरे दिन बापिस ले आये थे कि यह तो बहुत छोटी है"।

लेकिन मिसिज अग्रवाल चुप रहने बाली नहीं थीं "सुनो सुनो फिर ग्राहक ने कण्डोम माँगा जिसमें अपनी मिसिज मलहोत्रा एक्सपर्ट हैं"।

loveguruwb@yahoo.com

मिसिज मलहोत्रा ने फिर पूछा "क्या साइज है"

ग्राहक के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। मिसिज मलहोत्रा ने सुझाया "स्टोर के पीछे जाओ। वहाँ एक फैन्स है। उसमें तीन छेद हैं। उनमें बारी बारी से अपना डाल कर देखो किसमें फिट होता है"

जैसे ही ग्राहक फैन्स की तरफ गया मिसिज मलहोत्रा अन्दर के रास्ते से फैन्स के पीछे पहुँच गयी और नाप लेने के लिये साड़ी उठा कर उन्होने अपनी रसभरी फैन्स के पीछे बारी बारी से हर छेद से सटा दी।

ग्राहक के लौटने के पहले ही वह बापिस स्टोर पहुँच गयीं और उसके लिये कण्डोम निकाल ही रहीं थीं कि ग्राहक बोला "कण्डोम छोड़िये मेरे को 15 फीट फैन्स दे दीजिये"।

इस पर खूब हंगामा मचा। मिसिज अग्रवाल ने चालू रखा 'एक बार एक ग्राहक का मन मिसिज मलहोत्रा की खास चीज पर ही आ गया'। उसकी चाह पूरी करने के लिये वह उसे अन्दर के कमरे में ले गयीं। उसको खुश करने में या खुद खुश होने में उन्हें समय का ध्यान ही न रहा। देखा तो मिस्टर मलहोत्रा के आने का समय हो गया था। जल्दबाजी में भागीं तो पैण्टी पहिनना ही भूल गयीं। एक टैक्सी रोकी और निढाल हो कर पड़ रहीं। होश सँभला तो देखा कि बगैर पैण्टी के अन्दर का सारा नजारा रियरव्यू मिरर में दिख रहा था और टैक्सी ड्राइवर घूरे जा रहा था।

बात बनाने के लिये ड्राइवर बोला "मैडम पेमण्ट कैसे करेंगीं"।

मिसिज मलहोत्रा को मस्ती अभी भी थी शरारत सूझ अन्दर की चीज और दिखाते हुये कहा "इससे कैसा रहेगा"

ड्राइवर ने जवाब दिया "और छोटी साइज का नोट नहीं है"।

मिसिज अग्रवाल ने ट्रम्प कार्ड छोड़ दिया था। वह इसी तरह उलझतीं रहतीं थीं। कभी मेरा और कुमुद का नाम ले आतीं थीं।

अब शिशिर की बारी थी। राजू राजी पति पत्नि थे। राजी की बहिन की शादी थी। काफी पहले से दौनों को वहाँ जाना पड़ा। राजी का भरा पूरा परिवार था। नजदीक के महिमान भी आ गये थे। घर में अच्छी खासी रौनक हो गयी थी। ऐसे में सब औरतों को एक तरफ और मर्दो को दूसरे कमरों में सोना पड़ता था। राजू राजी मजा नही ले पा रहे थे। उन्होने एक तरीका निकाला। राजी ने कहा मैं हीरे की अँगूठी पहिन कर सोया करूँगी। अँगूठी रात के अँधेरे में चमकेगी। जब तुम्हारी तबियत हो तब गई रात आ जाया करो और बगैर आवाज किये मेरी खोल कर अपनी प्यास बुझा लिया करो। लेकिन ध्यान रहे चुपचाप करना क्योंकि अगल बगल में और औरतें सोयीं होंगी। राजू का काम बन गया । आये दिन जाता और तबियत से मजे उड़ाता। राजी उसकी बेजा हरकत पर आवाज भी नहीं उठा सकती थी। उन्होंने अपने इस प्लान का कोड रखा था 'परॉठे खाना'। राजी या राजू एक दूसरे से शरारत करने के लिये कहते 'रात को दो परॉठे खाये'।

एक सुबह राजू खुश था । राजी को देखा तो बोला "पहले तो तुमने बड़ी आना कानी की फिर बड़े मजे लेकर दो परॉठे खाये"

loveguruwb@yahoo.com

राजी बोली 'नहीं तो मेरी तो कल से अँगूठी ही नही मिल रही है"

सामने से इठलाती हुई मोहिनी भाभी आ कर बोलीं "बीवी जी अपनी यह अगूँठी लो कल बाथरूम में रखी छोड़ आयीं थीं"

फिर बोलीं "मेरी अँगीठी गरम थी सोचा दो परॉठे मैं भी सेक लूँ"

मक्कारी से राजू की तरफ देखती हुई "क्यों लाला जी परॉठे ठीक सिके थे"

शिशिर का जोक सुन कर सब की नजरें बचाकर मदभरी ऑखों से मुँह बिचका के मैने अपनी आशक्ति जता दी। शिशिर से सेक्स की बातें सुनती थी तो 'तमाशे' याद आ जाते थे और मेरी चूत में खुजली होने लगती थी। और उसकी मेरी तरफ वह आत्मियता। उसे मैं अपना समझने लगी थी। मैं पके आम की तरह उसकी झोली में गिरने को तैयार थी लेकिन शिशिर था कि दूरी ही बनाये हुये था। आज तो मौका देख कर हॅसी के बहाने दो बार मैं उसके ऊपर ढल चुकी थी।

इस बार मेरी हरकत का उसके ऊपर असर हुआ।

उसी दिन अकेला पाकर जोक की भाषा इस्तेमाल करता हुआ शिशिर बोला " भाभी अपनी अँगीठी पर मुझे परॉठे खिलाओ न"

मन चाही बात सुनकर मैं शोख अदा से बोली "मैंने कब मना किया है जब चाहे खालो"

शिशिर "लेकिन मैं जूठा नही खाता"

मैं "जूठी तो हो ही गयी हूँ देवर जी"

शिशिर " मेरा मतलब वह नही है भाभी। **24** घंटे तक कम से कम जुठरायी नहीं होनी चाहिये"

मैं "आज कल यह मुश्किल है। होली का समय है राकेश छोड़ते ही नहीं। अच्छा देखती हूँ"

**6**

होली के रंग

फाग का दिन। सेक्स भरा माहौल। पूरी मस्ती बाला दिन। सुबह से दोपहर तक रंग गुलाल से होली चहेतियों के साथ। मौका मिलते ही चहेती पर जितना हाथ साफ कर सके किया। फिर नहा धो कर घर घर जा कर गुझियॉ पपड़ियॉ। शाम को एक जगह जमावड़ा जहॉ भंग की तरंग में खुल कर ताना कसी छेड़ छाड़ खुले आम सेक्स की बातें। । रात तक पति पत्नि दोनों ही आनन्द में होते और जम कर मस्त मस्त चुदायी करते। यह है होली का मद भरा त्योहार।

कॉलोनी में औरतें अपना गुप बना लेतीं थीं और आदमी लोग अलग इकट्ठे हो जाते थे। फिर बेझिझक दोनों अलग से होली खेलते रहते थे फागें और अश्लील गाने गाते रहते थे और मनमानी हरकतें करते रहते थे। मालूम पड़ा था कि औरतें ऐसे गाने गातीं थीं और ऐसी ऐसी हरकतें करतीं

loveguruwb@yahoo.com

थीं कि आदमी भी दॉतों तले उॅगली दबालें। औरतों की लीडर एक मिसिज वर्मा थीं बिहार कीं। मिस्टर वर्मा थुलथुल थे और अपनी इंजीनियरी के रौबदौब में रहते थे। मिसिज वर्मा चुस्त थीं बिहार का सॉवला रंग और प्रौढ अवस्था में भी छहहरी देह। आगे को उभरे हुये जोबन और पीछे को उभरे हुये कूल्हे। सब मिला के बड़ी सैक्सी फिगर और उतनी ही सैक्सी उनकी बातें। उनको देखे बिना अंदाज भी नहीं हो सकता कि औरत में कितना सैक्स भरा हो सकता है और उसको वह कितने खुले आम प्रदर्शित कर सकती है।

औरतों और आदमियों अलग इकट्ठे होने के पहले मिसिज मलहोत्रा ने अपने पिछबाड़े आपस में होली खेलने का प्रोग्राम बनाया। उनके यहॉ एक पुरानी नाद थी जिसमें उन लोगों ने पानी भर कर रंग मिला दिया। जैसे जैसे लोग आते गये उनको रक्तग से सराबोर कर दिया गया और गुलाल से चेहरा मल दिया गया। लिहाज का पर्दा उठ गया था। आदमी लोग भाभियों को यानि कि दूसरों की बीवियों को पकड़ पकड़ कर रंग मल रहे थे। कुमुद अपने को बचाये हुये दूर खड़ी थी। उसने नयी धानी साड़ी पहिन रखी थी जो शिशिर के कहने पर नहीं बदली थी। काफी खुबसूरत लग रही थी। राकेश का मन उसके ऊपर था। वह गुलाल ले कर उसकी ओर बढा। कुमुद भागी राकेश उसके पीछे भागा। दीवाल के पास राकेश ने उसे पकड़ लिया। गुलाल से बचने के लिये कुमुद मुॅह यहॉ बहॉ कर रही थी। राकेश ने कस के उसको चिपका लिया यहॉ तक कि उसकी चूचियों का दबाव वह महसूस कर रहा था। रानों से रानें चिपक गयी थीं। उसने तबियत से कुमुद के गालों पर मुॅह से मुॅह रगड़ कर अपना गुलाल छुड़ाया। मुट्ठी का गुलाल उसके दोनों उभारों पर मला और नीचे हाथ डाल कर टॉगों के बीच गुलाल का हाथ रगड़ दिया। गुलाल की लाली में उसकी शर्म की लाली छुप गयी। दूर से लोगों ने सब कुछ न देख पाया। न जाने क्यों कुमुद को राकेश पर गुस्सा नहीं आ रहा था बल्कि इस सब से उसके मन में मिठाहस भर गयी थी।

सुनीता ने बहैसियत भाभी के शिशिर को खूब गुलाल मला लेकिन सबसे घाटे में वही रही क्योंकि उ सके और शिशिर के मन में जो था सब के देखते कुछ न कर पाये। मिसिज अग्रवाल बापिस जाने लगीं क्योंकि गॉव से उनकी भौजी आयीं हुयीं थीं जिनको वह घर छोड़ आयीं थीं। सब ने कहा कि भौजी को यहीं ले आओ। मिसिज मलहोत्रा मिसिज अग्रवाल को पकड़ कर ले गयीं और वह लपक कर भौजी को खींच लाये। भौजी अच्छी जबान थीं। गदराया शरीर था चहरे पर लुनाई थी। मॉन्सल थीं लेकिन मुटापा नहीं था मेहनती देह थी हाथ पैरों में बल था। सीने पर भी अच्छा मॉस था। भौजी ने अग्रवाल जी को देखा तो घूॅघट खींच लिया और पीठ कर के खड़ी हो गयीं। मलहोत्रा ने अग्रवाल को उकसाया "पलट दो घूॅघट अपनी सलहज के संग होली नहीं खेलोगे"। भौजी सिर हिलाती रहीं पर अग्रवाल ने उनका घूॅघट उघाड़ दिया और यह कहते हुये भौजी हमसे होली नहीं खेलोगी उनके दोनों गालों पर ठेर सा गुलाल मल दिया। मलहोत्रा ने उन्हें रंग से भिगो दिया।

भौजी बोलीं "बस हो गयी होली"।

वह उस क्षेत्र की थीं जहॉ औरतें कोड़ामार होली खेलतीं हैं पानी में भिगो भिगो कर आदमियों पर रस्से मारतीं हैं। भौजी ने अग्रवाल को उठा लिया और सीधा ले जाकर नॉद में गिरातीं हुई बोलीं

loveguruwb@yahoo.com

“लाला जी होली का मजा तो लो”।

सब लोगों में खुशी भर गयी।

कुमुद दौड़ी दौडी आयी और भौजी के कान में राकेश की तरफ इशारा करती हुई बोली “भौजी उ नको घसीटो ”।

भौजी और कुमुद दोनों ने दौड़ के राकेश को पकड़ पकड़ कर नॉद में गिरा दिया। उसके बाद तो सब की बारी आ गयी। आदमी लोग भी पीछे रहने बाले नहीं थे। सुनीता कुमुद मिसिज अग्रवाल मिसिज मलहोत्रा सब पानी में तर बतर हो गयीं। कपड़े उनके बदन से चिपक गये थे। उभारों पर साड़ी चिपकी थी चूतड़ों की दरार में साड़ी फॅस गयी थी रानों से पेटीकोट साड़ी चिपक गये थे जिससे टॉगों की आकृति और गहरायी दिख रही थी। सब कपड़ों में भी नंगी थीं। सब ललचाई नजरों से देख रहे थे। फिर गुलाल मलने का दौर चला। सबने सब औरतों के अम्ग छुये। उनको चिपका कर उनके बदन की आग ली। जिनकी आपस में रजामंदी थी उन्होंने लंड चूत पर भी हाथ फेरे। कुमुद ने राकेश का लंड सहला दिया। सुनीता ने अपनी रानें एक दम सटा कर शिशिर के लंड पर अपनी चूत दबा दी। मिसिज अग्रवाल और मिसिज मलहोत्रा ने तो सब के लंड का लुफ्त लिया। पूरे चेहरे रंग गुलाल में सन गये। वह भुतनियों जैसी लग रहीं थीं।

अग्रवाल और मलहोत्रा ने भौजी को पकड़ कर नॉद में धकेला तो भौजी अग्रवाल को भी अपने संग खींच ले गयीं। उनकी साड़ी उघड़ गयी थी और उन्होंने अपनी दोनों टॉगें अग्रवाल की कमर के ऊ पर बॉध कर उनको पानी में जकड़ रखा था। उन्होंने न तो चडढी पहिन रखी थी न ही ॲगिया। अगर अग्रवाल भी न पहने होते तो उनका का लंड भौजी की चूत में घुस गया होता। अग्रवाल जब पानी से निकले उनका लंड तना हुआ था जिससे पैण्ट में टैण्ट बन गया था। मिसिज अग्रवाल ने उसको देखा सबने देखा। वास्तव मैं सभी आदमियों की यही हालत हो रही थी। गीले पैण्टों से उनके लंड सर उठा रहे थे जिनको वह बड़ी मुश्किल से पैण्ट में हाथ डाल के दबा पा रहे थे।

भौजी जब पानी से निकलीं तो उनकी चूचियॉ तन गयीं थीं गीले ब्लाउज से दो नुकीली चोंचें निकल रही थीं। साड़ी ऊपर तक चिपक गयी थी। दो पुष्ट जाघें दिख रही थीं। वह बड़ी मादक दिख रहीं थीं। दोंनों हाथों में गुलाल भर के वह अग्रवाल से चिपक गयीं उनको तबियत से गुलाल मला।

मुस्करा कर ऑख नचा कर बोलीं “लाला फिर खेलियो होली”।

अकेला मिलने पर वह अग्रवाल से बोलीं “लाला तुम को सरम नईं आवत अपना खूॅटा हमाई ऊके मूॅ पैई लगा दओ। तुमारे सारे सें हम का कैहैं तुमने तौ हमें खराब कर दओ”।

अग्रवाल “कओ तो हम माफी लैहैं पर का करैं भौजी तुम हौई ऐसी कै हमाओ बौ काबू मेंई नई रओ”।

भौजी इतरा के “सबर रखौ ननदी से अच्छी हम थोड़े ही हैं”।

अग्रवाल “तुमारे से उनका का मुकाबला। भौजी जब मूॅ पर रख लऔ तौ भीतर लै लो न”।

loveguruwb@yahoo.com

भौजी ऑखें दिखाते हुये “लाला तुम बहुत बदमास हौ मैं ननदी से कऊॅगी”।

अग्रवाल “भौजी आप जौ चाहौ करौ हम तौ दिल की बात कै दई“।

भौजी मस्ती से ऑख नचाकर बोलीं “रात में जबई मौका मिलै आ जइयो तुमाई इछा पूरी कर देहैं”।

**7**

औरतों की होली

इस बीच औरतों का ग्रुप जमा हो गया था। लेडीज उधर चली गयीं। कुछ औरतें बातचीत सें हावभाव से हरकतों से बेकाबू हो रहीं थीं। फूहड़ से फूहड़ बातें कर रहीं थीं। वदन खोल खोल कर के दिखा रहीं थीं। इन सबमें आगे मिसिज वर्मा थी। वह एक बहुत बड़ा डिलडो लिये थीं। हरकतों से ऊपर से अपने में लगा कर दिखाती थीं। किसी औरत से चिपक जाती थीं उसको चूमने लगती थीं ऊपर से डिलडो लगाने लगती थीं।

ढोलक पर थाप पड़ने लगी। कोई स्वॉग भर रहा था। कोई नाच रहा था। कोई गा रहा था। मिसिज वर्मा की मंडली ने सामूहिक गाना शुरू कियाः

“झड़ते हैं जिसके लिये

चूत को याद कर के

ढूॅढ लाया हूॅ वही लंड मैं तेरे लिये

बुर में रख लेना इसे हाथों से ये छूटे न कहीं

पड़ा रहेगा यूॅही झॉटों के बाल तले

झड़ते हैं जिसके लिये रोज ही उठ उठ के।

लंड मोटा है मेरा चूत पै फिसले न कहीं

कसके ले लेना इसे चूत उठा उठा कर के

लगाये जायेगा यही धक्के  धकाधक से

झड़ते हैं जिसके लिये मूठ मल मल के”।

मिसिज वर्मा ने शेर सुनाना चालू कियेः

दिल तो दिया है तुझे पर एक शर्त लगायी है

लेनी है वो चीज जो तूने टॉगों में छिपायी है।

और उन्होंने टॉगों के बीच में हाथ कर लिया।

फिर

बेदर्द जमाना क्या जाने क्या चीज जुदायी होती है

मैं चूत पकड़ कर बैठी हूँ घर घर में चुदायी होती है।

चूत को उन्होंने मुट्ठी में जकड़ लिया।

फिर

मुड़ कर जरा इधर भी देख जालिम

कि तमन्ना हम भी रखते हैं

लंड तेरे पास है तो क्या

चूत तो हम भी रखते हैं।

यह कहते हुये उन्होंने साड़ी ऊपर उठा दी नीचे कुछ भी नहीं पहने थीं।

शेर कहे शायरी कहे या कहे कोई खयाल

बीवी उसकी चूत उठाये चोदे उसका यार।

यह कह कर टॉगें फैला कर उन्होंने ऐसी हरकत की जैसे चुदवा रहीं हों।

अचानक भौजी ने जोर से कहा "ऐसी गरम हो रई है तौ खोल कै सड़क पै खड़ी हो जा कोई लगा दैगो"।

मिसिज वर्मा को ऐसी उम्मीद नहीं थी उन्होंने चौंक कर भौजी को देखा

और बोलीं "लगता है तुम सड़क पर ही लगवाती होगी तेरा आदमी नामर्द होगा"।

भौजी ने जवाब दिया "मेरा आदमी तेरे जैसी चार को एक साथ करै तेराई आदमी तेरी भूख न मिटा पायै"।

मिसिज वर्मा भौजी के पास आ गयीं बोली" तू कितनों का एक साथ ले सकती है। ला देखूँ क्या छिपाया है"

यह कहते हुये उन्होंने धक्का देकर भौजी को चित गिरा दिया और आदमी की तरह उन पर पसर

loveguruwb@yahoo.com

गयीं।

भौजी ने चट पलटा खा कर मिसिज वर्मा को अपने नीचे कर लिया ।एक हाथ से उनके दोनों कला इयॉ जकड़ ली।मिसिज वर्मा ने छुड़ाने की बड़ी कोशिश की पर भौजी की मजबूत जकड़ से न छूट सकीं।

मिसिज वर्मा की साड़ी पलटते हुये भौजी ने कहा "बछिया जैसी गरमा रही है ले मैं लगाती हूँ बैल का तेरे में"।

अपने दोनों घुटने फॅसाकर भौजी ने मिसिज वर्मा की टॉगें चौड़ा दी।चूत मुॅह खोले सामने थी।अच्छा खासा बड़ा सा छेद था।भोसड़ी हो गयी थी।लगता था खूब स्तेमाल की गयी थी।भोसड़ी गीली हो रही थी।गुलाबी नरम गहराइयों में पानी और गाढी सी सफेदी चमक रही थी।मालूम होता था हाल में ही लंड का रस चखा था जो थोड़ा अन्दर रह गया था।पाानी बाहर रिस रहा था। सब लोग घेर लगा कर मजे ले कर देख रहे थे। भौजी ने सुपर साइज का डिलडो उठा लिया।

मिसिज वर्मा गिगया उठीं "इसे मत करो मैं नहीं ले पाउॅगी रियली मैं नहीं ले सकती इसे प्लीज"।

भौजी बोली "लेगी कैसे नई इतना डलबाने के लिये सोर जो मचाबै है"।

उन्होंने डिलडो को चूत के छेद में घुसेड़ा तो बड़ी मुश्किल से अन्दर गया।उन्होंने घुमा कर के और भीतर करना चाहा तो मिसिज वर्मा तड़पने लगीं।वह सिर यहॉ वहॉ पटक रहीं थीं और बोले जा रहीं थीं "मत करो प्लीज"।

भौजी ने जोर लगाके डिलडो को आधा अन्दर कर ही दिया। मिसिज वर्मा के मुॅह से एक चीख निकली।अब भौजी डिलडो को आगे पीछे कर रहीं थीं साथ ही चूत की घुंडी पर अॅगूठा फेरती जा रहीं थीं।धीरे धीरे मिसिज वर्मा को मजा आने लगा।वह आनन्द में भर कर 'सी सी' करने लगीं थीं।बोले जा रहीं थीं "घुसेड़ दो उसको और अन्दर लगाओ और कस के" ।

लेकिन डिलडो उनके अन्दर उससे ज्यादा और नहीं घुस सकता था।

वह भौजी को अपने ऊपर खीचना चाहतीं थीं आदमी जैसा कस के प्यार पाने के लिये।

भौजी ने कहा "लो अब कौन इनको सॅभालेगा"।

और मिसिज वर्मा की एक सहेली चूत खोल के उनके ऊपर लेट गयी।

सेर को सवा सेर मिल गया था।

## 8

### होली की महफिल

होली की शाम को सब लोग नहा धोकर शिशिर के यहॉ इकट्ठे हुये।मलहोत्रा परिवार न आ सका उ नके यहॉ महिमान आ गये थे।कुमुद ने सेब पापड़ी गुजियॉ भंग की बरफी और भंग मिली ठंडाई का इंतजाम कर रखा था।होली के माहौल का असर था ऊपर से भंग का सुरूर सब बहक रहे थे।राकेश

loveguruwb@yahoo.com

ने सुझाया सब लोग अपने अपने पहले सेक्स का अनुभव सुनायें। सब एक साथ बोले हॉ सब लोग अपनी अपनी बीती बतायें। सबसे पहले मेजमान शिशिर से कहा गया कि वह अपना एक्सपीरियेंन्स बताये।

शिशिर की कहानी

होली का दिन था। मैं इण्टरमीडियेट में रहा हूँगा। मेरी भाभी मुहल्ले में होली खेल के आयीं। वह बड़ी खुश थीं कुछ गुनगुना रहीं थीं। मैं यह बता दूँ कि भाभी मेरे से छह सात साल बढी थीं। मेरे से बड़ा लाड़ करतीं थीं जिसमें सेक्स बिल्कुल नहीं था। जब वह ब्याह के आयीं मै दस साल का रहा हूँगा। वह बिल्कुल भीग गयीं थीं। साड़ी वदन से चिपक गयी थी। उनके उभार और कमर की गोला इयॉ पूरी तरह उभर आयीं थीं। मेरी भाभी में बहुत ग्रेस था। अच्छी उॅचाई थी आकर्षक मुॅखछबि थी और शादी के छह सात सालों में वदन बड़ी समानता से सुडौल हो गया था।

आते ही वह बाथरूम में चली गयीं। बाथरूम में दो दरबाजे थे एक उनके कमरे की तरफ खुलता था एक मेरे कमरे की ओर जो अक्सर बंद रहता था क्योंकि मैं नीचे का बाथरूम इस्तेमाल करता था। लेकिन इस समय मेरी तरफ का दरबाजा खुला हुआ था। उन्होंने भी ध्यान नहीं दिया क्योंकि होली के लिये मुझे अपने दोस्त के यहॉ जाना था और दूसरे दिन बापिस आना था लेकिन मेरा प्रोग्राम ऐन मौके पर कैन्सिल हो गया था। मैं यही होली खेल कर बापिस आ गया था और उसी बाथरूम में नहा धो लिया था। गलती से अपनी तरफ का दरबाजा खुला छूट गया था। मैं कमरे में आराम से लेटा हुआ था जहॉ से बाथरूम का नजारा साफ नजर आ रहा था।

भाभी ने सबसे पहले अपनी साड़ी उतार के फेंक दी फिर पेटीकोट के अन्दर हाथ डाल के अपनी पैण्टी खीच ली। वह रंग से तर हो रही थी जैसे उस पर ही निशाना लगा कर रंग फेंका गया हो। जैसे जैसे वह ब्लाउज के बटन खोल रहीं थीं मेरी सॉसे गरम होती जा रहीं थीं। ब्लाउज उनके शरीर से फिसल कर नीचे गिर गया। वह मेरे सामने केवल ब्रेजियर और पेटीकोट में खड़ी थीं। ब्रेजियर उनके सीने से चिपक गयी थी बादामी शहतूत से निप्पिल और उनके घेरे साफ नजर आ रहे थे। पेटीकोट आगे से उनकी रानों से बुरी तरह चिपक गया था और चूतड़ों के बीच में कैक में फॅस गया था। सामने झॉट के बाल नजर आ रहे थे। उत्तेजित हो कर मेरा लंड एक दम खड़ा हो गया।

उन्होंने पीछे हाथ कर के जैसे ही हुक खोल कर ब्रेजियर अलग की कि स्प्रिंग की तरह दो सफेद बालें सामने आ गयीं। बहुत ही मताबाले भरे हुये जोबन थे। भाभी ने अपना हाथ पेटीकोट के नाड़े की तरफ बढाया तो मेरा लंड और ऊपर हो कर हिलने लगा। उन्होंने एक इटके में नाड़ा खींचा और पेटीकोट नीचे गिर गया। माई गॉड मेरे सामने भाभी पूरी नंगी खड़ी थीं। बड़े बड़े उभार बादामी फूले फूले निप्पिल चिकनी सुडौल जाघें भरे भरे उभार लिय चूतडों की गोलाइयॉ और जाघों के ऊपर तरासे हुये बादामी बाल। मैने अपना लंड पकड़ लिया नहीं तो वह हिल हिल के बुरा हाल कर देता।

loveguruwb@yahoo.com

भाभी की जाघों पर चूतड़ों पर रंग के धब्बे लगे हुये थे। चूत के बाल भी रंग में चिपक गये थे। उन्होंने साबुन से मल के रंग को छुड़ाया। इसके बाद उन्होंने जो कुछ किया मैं उठ के खड़ा हो गया। भाभी ने साबुन का ढेर सारा झाग बनाया और अपनी टॉगें चौड़ी कर उॅगली से साबुन का झाग अपनी चूत को अन्दर बाहर करने लगीं। मेरे सामने उनकी चूत का मुॅह खुला हुआ था। छेद के ऊपर फॉकों के बीच की और अन्दर की साबुन मिली लाल गहरायी मेरे सामने थी। लगता था वह रात के लिये तैयारी कर रहीं थीं। मेरे से न रहा गया और मैं दरबाजे के सामने जा खड़ा हुआ लंड एकदम तना हुआ।

भाभी ने मुझे देखा और उनके मुॅह से चीख निकली "उई मॉ"

फिर एक हाथ से उन्होंने अपनी चूत ढॅक ली और दूसरे से अपनी चूचियॉ छिपाते हुये बोलीं "ऐसे क्या देखते हो जाओ न"

फिर खुद ही भाग कर अपने कमरें में चलीं गयीं।

मैं बहुत गरम हो चुका था। उत्तेजना में मेरा लंड फड़फड़ा रहा था। ऑखों के सामने भाभी का नंगा वदन नाच रहा था। मैं बाथरूम में घुस गया। पैण्ट उतार कर लंड को कस कस के झटके दिये जब तक कि गाढा गाढा सफेद पदार्थ काफी देर तक उगलता रहा। भाभी की पैण्टी उठा के उससे पौंछा। पता नहीं भाभी ने यह सब देखां या नहीं।

शाम को भाभी मिलीं तो शर्म से लाल हो रहीं थीं। ऑखें नहीं मिला रहीं थीं।

हिम्मत करके मैंने उनसे से कहा "भाभी आप अन्दर से भी उतनी सुन्दर हैं जितनी बाहर से"

भाभी बोलीं "तुम बहुत बेशरम हो गये हो जल्दी तुम्हारी शादी करना पड़ेगी"।

उसके बाद बहुत दिनों तक वह मुझसे शर्माती रहीं। मैं भी उनसे बहुत दिनों तक सहज न हो पाया।

सुनीता सोच रही थी कि शिशिर उसमें अपनी भाभी को देखता है और इसीलिये शुरू से उसको ताकता है और भाभी भाभी कहता है। जैसी अपनी भाभी के सामने न बढा उसी तरह उसके आगे भी नहीं बढता है। सुनीता ने निश्चय कर लिया कि इसका यह बैरियर तोड़ना ही पड़ेगा।

कुमुद की कहानी

मेजमान के रूप में अगली बारी कुमुद की थी। कुमुद ने पहले सेक्स बाली बातें महफिल में नहीं सुनाई थीं। पहले तो झिझकी

लेकिन फिर कहने लगीः

'होली मनाने मेरी दीदी मैके आयीं थीं । उनकी शादी को एक साल से कम हुआ था। होली बाले दिन जीजाजी भी आ गये। जीजाजी बड़े खुले और मजाकिया किस्म के हैं। मेरी भाभियों ने उनसे

loveguruwb@yahoo.com

छेड़खानी की गंदे मजाक किये जिनका उन्होंने तुरत बढकर जबाव दिया उनके संग होली खेली जिसमें मर्यादा को ध्यान में रखते हुये उन्होंने एक दूसरे के अम्ग छुये। मेरे साथ भी जीजाजी ने होली खेली लेकिन उस समय वह मर्यादा भूल गये। रंग लगाने के बहाने उन्होंने मेरे दोंनों उरोजों मसला और हाथ बढा कर चूत के ऊपर भी रगड़ दिया'। यह कह कर कुमुद ने सबेरे की होली को लक्ष कर दबी ऑखों से राकेश की ओर देखा।

कुमुद ने कहना चालू रखा 'मेरी दीदी ने देख करके अनजानी कर दी। भाभियॉ हॅसती रहीं। मेरे ऊपर कुछ सुरूर आ गया। रंग बाजी खतम हुई तो कहा गया सब लोग नहा धोकर तैयार हो जाओ क्येंकि जीजाजी के चाचा जी ने सब को बुलाया है जो उसी शहर में रहते थे। एक भाभी ने ताना कसा कि मेरी ननद यानी दीदी के संग तो होली मनाई ही नही है तो वह मुस्कराके बोले अभी मनाउॅगा। मैं नहाने के लिये गुसलखाने में घुस गयी। कपड़े उतार के नीचे की ओर देखा जहॉ जीजाजी ने हाथ लगाया था तो सिहरन हो आयी। मैंने वहॉ पाानी की तेज धार छोड़ दी। साबुन उठाने के लिये ताक पर हाथ बढाया और ऊपर देखा जहॉ से छत साफ नजर आती थी। वहॉ जीजाजी दीदी को पकड़े हुये थे। छत की सीढियों का दरबाजा उन्होंने बन्द कर रखा था। दीदी रंग से सराबोर हो रहीं थीं। दीदी अपने को छुड़ा के भागीं। जीजाजी ने छत की मुॅरेड़पर दीदी को पकड़ लिया और सामने से चिपका लिया। दीदी मुॅरेड़ पर झुकतीं गयीं और जीजाजी उनकी चूचियों को चूमने लगे। दीदी ने उनके सिर के ऊपर हाथ रख कर और जोर से सिर चूचियों पर दबा लिया और दूसरे हाथ से जीजाजी का लंड टटोलने लगीं। जीजाजी  को जैसे करैंट लग गया हो। वह दीदी से अलग हो गये और पेटीकोट समेत उनकी साड़ी उलट दी। गीले अण्डरवियर को नीचे खींच कर उतार लिया फिर उॅगली में घुमाते हुये नीचे सड़क पर फेंक दिया। अपने हाथ से पैण्ट के बटन खोलने लगे इस बीच दीदी अपने ब्लाउज के बटन खोल चुकीं थीं और उन्होंने ब्रेजियर के हुक खोल कर उसको अलग कर दिया। उनके भरे जोबन मुॅह बाये खड़ थे। मुझे नहीं मालूम था कि उनकी गोलाइयॉ इतनी बड़ी थीं। जीजाजी ने अपनी पैण्ट गिरा दी। उनका मोटा लंड एकदम अटैन्शन में खड़ा था। उस बीच मैं साबुन घिस घिस के बहुत सारा जीजाजी का लंड सामने आया अपने आप मेरा हाथ चूत के छेद पर चला गया और मैंने सारा  का सारा झाग चूत में घुसेड़ लिया।

दीदी ने अपने आप टॉगें चौड़ा दीं। वह चूत का मुॅह फैलाये मुरेड़ से टिकी झुकी हुयीं थीं पीठ मुरेड़ पर पसरी हुई थी। दीदी का सिर मुॅड़ेर से बाहर निकला हुआ था। सड़क पर जाने बाला कोई भी ऊपर देखे तो उनकी पोजीशन को देख सकता था लेकिन इस समय उनको इसकी फिक नहीं थी। जीजाजी  ने खडे खड़े ही लंड को हाथ से पकड़ कर उनकी चूत के मुॅह पर रखा और धीरे धीरे अन्दर डालना चालू किया। दीदी की चूत उसको लीलती गयी। दीदी ने कस करके दोनों बाहें जीजाजी की पीठ पर बॉध लीं। पहले तो जीजाजी धीरे आगे पीछे करते रहे फिर उन्होंने धकाधक धकाधक चालू कर दी। दीदी भी चूत उठा उठा कर के झेल रहीं थीं।

इस बीच पता नहीं कब मै गुसलखान में रखी कपड़े डालने की रैक से टिक गयी थी और उसकी खूॅटी की घुॅण्डी को अपनी चूत मेंघुसेड़ लिया था। जब जीजाजी धकाधक लगा रहे थे मैं भी खूॅटी पर उसी रिदिम से आगे पीछे हो रही थी। मैं मजे में पूरी तरह डूबी थी कि दरबाजा खटखटाने से होश में आयी। बड़ी भाभी कह रहीं थी अब निकलोगी भी बाहर या नहाती ही रहोगी सब को तैयार

loveguruwb@yahoo.com

होना है।

मैने जल्दी से अपनी सफाई की और बाहर निकल आयी। जीजाजी अभी भी दीदी को लगाये जा रहे थे।

उसी दिन शाम जीजाजी के चाचा जी के यहॉ मेरी शिशिर से मुलाकात हुई। वास्तव में हम लोगों को मिलाने के लिये ही यह आयोजन किया गया था।

कहानी खत्म होने पर बड़े कामुक तरीके से राकेश ने कुमुद को देखा।

राकेश की कहानी

अब बारी राकेश की थी। उसने कहाः

मेरी शादी की तैयारियॉ हो रहीं थीं। कॉलिज के मेरे दोस्त जमा हो गये थे। शादी के कामों में नाइन का काफी रोल होता है। बहुत सारे नेगों में नाइन का अहम पार्ट होता है। भाभी ने उपटन की रस्म की तो मेरे को हल्दी बेसन और चंदन से अच्छी तरह उपटन देने के लिये नाइन बैठी। कलावती उ सका नाम था। कलाबती दुबली पतली थी सॉवला रंग था। बड़ी बड़ी ऑखों बाले उसके चेहरे में बेहद आकर्षण था। कामकाजी शरीर एकदम चुस्त और छहररा था कहीं भी बेकार का फैट नहीं। उ सके लंबे वदन की कशिश किसी को भी बॉध लेती थी। वह एकदम जबान थी। उपटन लगाते हुये जब दोस्तों ने देखा तो कइयों का दिल उस पर आ गया। शाम को जब हम सब लोग बैठे तो रमेश ने जो मैरिड था कहा कि वह नाइन की लेना चाहता है। उसके बाद तो एक एक करके सब मैरिड और क्वॉरे दोस्तों ने अपनी मंशा जता दी कि वह कलावती को चोदना चाहते हैं। डर था कि नाइन की उनकी बात सुन कर भड़क न उठे और जंजाल खड़ा कर दे। रमेश बोला 'मैं रह नहीं सकता मैं नाइन से बात करूॅगा'। मेरे को बड़ा डर लगा कि कहीं बवंडर न उठ खड़ा हो। रमेश नि समझाया कि तुम मत घबड़ाओ मैं सीधे पूॅछ लूॅगा। न चाहेगी तो बात खतम।

नाइन को एक नौकरानी के जरिये यह कह कर बुलाया गया कि दूल्हे राजा बुलाते हैं। मैं और सब दोस्त अन्दर के दूसरे कमरे में बैठ गये केबल रमैश उस कमरे में रहा। कलावती आयी तो मुझे पूछने लगी। रमेश बड़ी नम्रता से बोला "कलावती दूल्हेराजा तुमसे शर्मा रहे हैं। मुझसे कहा है कि तुमसे बात करूॅ। देखो कलावती मेरी बात तुम्हें अच्छी न लगे तो नाराज न होना मैं दूल्हेराजा की तरफ से तुमसे माफी मॉग लूॅगा लेकिन बात आगे मत बढाना"

कलावती सहम गयी "आप क्या बात करते हैं बाबू जी बोलिये क्या है"

रमेश "कलावती तुम बहुत अच्छी हो तुम्हारा घरबाला बहुत ही भाग्यवान है। बात यह है कि तुमने हम लोगों का दिल जीत लिया है। हम लोग चाहते हैं कि तुम हमें सुख दे दो कि हम हमेशा तुम्हें याद करते रहें"।

कलावती कुछ समझी कुछ नहीं बोली'मैं क्या सेवा कर सकती हूॅ"।

. रमेश को सीधा कहना पड़ा "हम लोग तुमको भोगना चाहते हैं"

loveguruwb@yahoo.com

मेरा दिल धकधक कर रहा था।

कलावती के चेहरे पर लाजभरी खुशी दौड़ गयी।मस्ताके बोली "सबसे पहले दूल्हेराजा को करना होगा।अपनी दुल्हन से पहले मेरे साथ सुहागरात मनॉयें।उनसे सोने का गहना लॅगी फिर तुम सब लोगों की तबियत खुश कर दूॅगी"।

शर्त बड़ी टेढी थी।शादी शुरू हो गयी थी नेग हो रहे थे।मैं सुनीता के लिये बेकरार था कलावती से संभोग नहीं कर सकता था।उसको बहुत समझाया ज्यादा पैसे का लालच दिया लेकिन वह टस से मस न हुई।यहॉ मेरे दोस्त मेरे ऊपर दबाव डाल रहे थे वह कलावती को चोदने को उताावले थे।कहने लगे नाम के लिये डाल देना बस।उतने सारे दोस्तों का मन रखने के लिये मुझे उनकी बात मानना पड़ी।

तय हुआ कि बारात उठने के पहले जब मुझे तैयार होने के लिये एक कमरे में अकेला छोड़ दिया जायेगा कलावती चुपचाप कमरे में आ जायेगी।नाइन होने से उसका आना जाना आसान था।शादी के बाद जब मैं सुनीता रातें रंगीन कर कहा हूॅगा मेरे दोस्त भी कलावती के संग आनन्द मनायेंगे।

जब कलावती कमरे मे आयी मैं उसे देखता ही रह गया।लगता है उसने अपना भी उपटन कर डाला था।चेहरे पर गजब की लुनायी थी।बहुत कीमती न सही लेकिन उसने एक अच्छी साड़ी और राजिस्थानी चोली पहन रखी थी जो उसके ऊपर खूब फब रही थी। आते ही उसने मेरे पैर छुये।मैंने यह कहते हुये कि ये क्या करती हो अपने से चिपका लिया।उसकी कमनीय देह बेल सी मेरे से चिपक गयी।उसका वदन मेरे व्दन के उतार चड़ाव में फिट हो गया था।मेरी रानों में उसकी जॉघें समा गयीं थीं।लंड के ऊपर चूत फिट हो गयी थी।सीने पर उसके सख्त स्तनों और चूचियों की चुभन महसूस कर रहा था।वह और भी चिपकती हुई खड़ी रही।जल्दी से निपटने के लिये मैंने चूत छुने को साड़ी में हाथ डालना चाहा तो वह बोली "राजाजी इत्ते बेसब्र न हो।लो इनसे खेलो"।हाथ पीछे कर उसने चोली की डोर खींच दी।नीचे उसने कुछ भी नहीं पहन रखा था।लपक कर मैंने दोनों गोलाइयों को मुट्ठी में दबा लिया।उसकी छातियॉ छोटी पर सख्त थीं।

छातियो को मसलते ही कलावती 'आह आह' कर उठी।मैंने सिर झुका के उसकी वायीं चूची मुॅह में कर के धीरे से दॉतों से दबा ली। खलावती जोर जोर से 'उइईईईई' कर उठी।जल्दी ही वह गरम हो गयी थी।उससे अब रहा न गया लंड को पकड़ के हिलाते हुये बोली इसे निकालो न।मैंने पजामा और अण्डरवियर नाड़ा खोल कर नीचे गिरा दिया।

उसने मेरा तना हुआ लंड देखा तो मुॅह से निकल गया"उई दैया इत्ता बड़ा हथियार है मेरी लिल्ली में कैसे घुसेगा"।

मैंने कहा "तो फिर अपनी लिल्ली दिखाओ न" और उसके पेटीकोट का नाड़ा खींच दिया।साड़ी समेत पेटीकोट नीचे गिर गया।

जैसे ही वह नंगी हुई भाग के बिस्तर पर लेट गयी।मैं भी पूरा नंगा हो कर उसके ऊपर जा गिरा।

कलावती ने मेरे से पूछा "राजाजी तुमने पहले किसी को चोदा है"।

मैं झूठ बोला "नहीं तो"

loveguruwb@yahoo.com

कलावती का चेहरा चमक उठा “ओ मइया मैं ही इसका पहला रस लूँगी। मैं ही आपकी सही औरत बनूँगी”।

फिर बोली “इसका प्रसाद चखना होगा”।

मेरे को पलटा कर वह दोनों टाँगों के बीच बैठ गयी। दोनों हाथों से लंड को छू कर हाथ माथे पर लगा लिये जैसे यह भी कोई पूजा की चीज हो। दाँई मुट्ठी में लंड को बंद कर उसके मालिस के अभ्यस्थ हाथों ने मुट्ठी पूरे लंड पर इस तरह आगे पीछे की मैं हवा में तैरने लगा। फिर अगले हिस्से की खाल हटा कर सुपाड़ा उसने मुँह में ले लिया और उसे चूसने लगी। मेरा लंड फड़फड़ाने लगा। फिर पूरे लंड चचोरने लगी।

मैं बेकाबू हो गया। चूतड़ उठा उठा कर लंड उसके मुँह में ही पेलने लगा।

मेरे से उसने कहा “जब झड़ो तो रूकना नहीं। ज्यादा से ज्यादा आने देना।

इसके बाद उसने जो रिदिम चालू की कि मेरे चूतड़ हवा में ही उठे रह गये और बढ बढ के धकाधक करने लगे।

कलावती भी मुँह से पसंदगी जता रही थी “उऊँ ऊँ ऊँ ऊँ”

मेरे से रोका न गया। लंड ने एक झटका दिया और जैसे ही उगलना चालू किया उसने फिर सुपाड़े को दाँतों में थाम लिया और निकलते हुये रस कोपीती गयी।

जब लंड ठंडा हो गया तो आखिरी बार चाटती हुई बोली” अपने मर्द के अलाबा बस मैंने तुम्हारा प्रसाद लिया है। उनका भी बस चखा भर था। आपके दोस्त किसी का भी नहीं चखूँगी”। मैने खींच करके उसको अपने सीने से चिपका लिया।

कलावती ने मेरे सीने की बूँद को मुँह में ले लिया और हाथ नीचे ले जा कर मेरे लंड के ऊपर ढँक लिया। सीने से चिपके चिपके ही वह धीरे धीरे मेरी निपिल चूसने लगी और बड़े सूदिंग तरीके से लंड सहलाने लगी। मेरा लंड बढता ही गया और थोड़ी ही देर में पत्थर की तरह सख्त हो गया।

‘लो अपनी सुहागरात मनालो’ कह कर पलट कर चित्त लेट गयी।

फिर बोली “मैं बताती हूँ कल अपनी दुल्हन की सील कैसे तोड़ोगे”।

टाँगें चौड़ा के उनके बीच में मुझे घुटनों के बल बैठा लिया। फिर अपने मेरे दोनों कंधों पर रख लिये। उसके चूतड़ हवा में उठ गये थे। मेरे सीधे सामने चूत का मुँह खुल गया था। छेद अन्दर तक दिख रहा था।

अन्दर तक चूत गीली थी और पानी रिस कर राँनों पर फैल रहा था।

कलावती ने अपनी मुट्ठी से लंड पकड़ कर चूत के मुँह से सटा दिया और बोली “इसे धीरे धीरे घुसेड़ दो”।

मैने जोर लगाया। उसकी चूत टाइट थी पर मेरा पूरा लंड आसानी से उसमें चला गया। चूत की ग्रिप में उसको बहुत आनन्द मिल रहा था।

कलावती कहने लगी “राजाजी हमारी इसमें तो आराम से चला गया लेकिन कल ऐसा नहीं कर पाओगे। दुल्हन की फुद्दी में घुसेगा नहीं और रिपट कर ऊपर खिसक जायेगा। और जब घुसने लगेगा तो दुल्हन अपनी फुद्दी पीछे हटातीं जायेंगीं क्योंकि उनको दर्द होगा। इस आसन में तुम दुल्हन पर पूरा काबू रख सकते हो। अगर टॉगें कस के जकड़ लोगे तो वह पीछे नहीं हट पायेंगी। रूक रूक कर के डालना लेकिन वह मना करें चीखें भी तो मत रूकना पूरा अन्दर कर ही देना”।

मैं इस बीच थीरे धीरे अन्दर बाहर कर रहा था।

कलावती कहने लगी “मेरी इसको तो कूटो न कस के कि इसकी सारी गरमी निकल जाये”।

मैने बाहर तक निकाला और झटके से पूरा अन्दर कर दिया।

कलावती के मुॅह से निकला “हाय राजा क्या लौड़ा है अन्दर तक हिला दिया और लगाओ कस के”।

उसके मुॅह से खुला खुला सुन कर मैं और उत्तेजित हो गया। पिस्टन की तरह धकम पेल करने लगा। बड़ी दूर तक बाहर निकालता और खड़ाक से अन्दर कर देता। उसने कस के बॉहों से मेरी पीठ को जकड़ रखा था।

हर चोट पर वह पीठ में नाखून गड़ा देती और जोर से चिल्लाती “ओ रज्जा फाड़ दो इसको छोड़ना नहीं”

उसकी जबान गंदी से गंदी होती जा रही थी “रज्जा इस की भोसड़ी बना दो आज बड़ा सताती है मुझे”

मेरे को उसकी गंदी बातें बुरी नहीं लग रहीं थीं बल्कि मैं आनंदित हो रहा था और अपनी चोटें बढाता जा रहा था।

अचानक उसने कसके चूत चिपका दी “अ अ ओ ओ ओ र ज ज जा जा मैं तो तो इ इ झ ड़ ड़ ड़ ग यी यी यी यी”

और अपने दॉत मेर सीने गड़ा दिये। मैने भी लंड अन्दर रहते हुये ही. उसकी क्लीटोरिस के ऊपर ळंड की जड़ को कस के रगड़ा और सारा का सारा लोड छोड़ दिया।

काफी देर तक हम लोग बैसे ही पड़े रहे। फिर वह उठी। उकडूॅ हो कर के उसने अपना सिर मेरे पैरों पर रखा दिया। मैने उठ कर के एक सोने का हार उसके गले में डाल दिया।

वह बोली “ राजाजी मेरे को भूल मत जाना। मैं भी आप औरत की तरह हूॅ। सुहागरात आपने मेरे साथ मनाई है”।

और वह कपड़े पहिन कर चली गयी। कहॉ तो मैं जल्दी निपटना चाहता था कहॉ एक घंटे से ऊपर उसके साथ हो गया।

कुमुद अपना क्षोभ न छुपा सकी “हाउ इनसैंसिटिव। बेचारी सुनीता”

loveguruwb@yahoo.com

अब सुनीता की बारी थी।

सुनीता की कहानी

सुनीता ने कहाः

मेरा पहला और आखिरी सेक्स बस राकेश से ही है। लेकिन मैं अपनी कहानी तब कहूँगी जब राकेश यहाँ से चले जायें।

राकेश ने जाने से मना कर दिया। सब लोगो के जोर देने पर आखिर राकेश को वहाँ से जाना ही पड़ा।

सुनीता ने कहना शुरू कियाः

राकेश से मेरी मुलाकात की शुरूआत देखने दिखाने के सिलसिले में औपचारिक रूप से हुई थी। हम लोग एक ही शहर में रहते थे। बाद में मेरी एक सहेली के जरिये जो उनकी कॉलोनी में रहती थी हम लोंगों का सम्पर्क बन गया था। हम लोग मिलते रहते थे लेकिन एक दूसरे को बाँहों में लेने या चुम्बन लेने से आगे नहीं बढे थे मैने ही नहीं बढने दिया था।

यह प्रसंग मेरी और राकेश की शादी का ही है। राकेश के रिस्तेदार और दोस्त इकट्ठे हो गये थे। मेरे यहाँ भी मेरी सहेलियाँ और मेहमान जमा थे। विवाह के पहले के नेग हो रहे थे। बारात आने के एक दिन पहले सहेली के जरिये मुझे राकेश का एक गुप्त नोट मिला आज रात होटल ताज के इस रूम में जरूर से हमसे मिलो। हल्दी बगैरह चड़ ने के बाद मैं घर से कैसे निकल सकती थी लेकिन जरूर मिलो की खबर सुनकर जाना तो था ही। बड़ी मुश्किल से अकेले कमरे में आराम करने का बहाना कर सहेली की सहायता से छुप छिपा कर बाहर निकल पायी। होटल पहुँची तो सिहरन होने लगी। ऐसा लग रहा था कि इस राकेश से मैं पहली बार मिलने जा रही हूँ। मिलन की कामना से शरीर गरम हो गया। कमरे में पहुँची तो शर्म से दुहरी हो रही थी। गहने और शादी के जोड़े के अलाबा मैं सब तरह से दुल्हन थी।

कमरे में पहुँचते ही राकेश ने मुझे दबोच लिया और कस कर होंठों पर अपने होंठ रख दिये। मैने भी उसे कस कर जकड़ लिया। बैसे ही ले जाकर उसने मुझे बैड पर गिरा दिया और खुद मेरे ऊपर गिर गया। ब्लाउज के ऊपर ही दायें उरोज पर उसने मुँह रख दिया और बाँयें को मुट्ठी में दबोच लिया। मुझे न करने की इच्छा ही नहीं हुई। वह धीरे धीरे बात करता रहा और मेरे बटन और हुक खोलता रहा। उसने जो बताया मैं शर्म से गड़ गयी।

दो दिन पहले मेरे यहाँ मेंहदी की रस्म हुई थी। एक चौकी पर बैठी मैं मेंहदी लगबा रही थी घुटनों पर हथेलियाँ फैलाये तभी राकेश और उसके दोस्त वहाँ आ गये थे। उस दिन रिवाज के अनसार मैने लहँगा पहना था। आदत न होने के कारण लहँगे का ऊपर का हिस्सा मुड़े हुये घुटनों के ऊपर चढ गया था और नीचे का हिस्सा जमीन पर गिर गया था। टाँगों के बीच का नजारा साफ दिख रहा

loveguruwb@yahoo.com

था। मैने पिंक सिल्क की पैण्टी पहिन रखी थी। शायद मैं आने रंगीनियों को याद कर के बहुत गरमा रही थी क्योंकि पैण्टी पर चूत के ठीक ऊपर एक बड़ा गीला धब्बा फैला हुआ था। उसके सब दोस्तों ने उसको देखा। मेंहदी लगाने बाला भी बार बार वहॉ देख रहा था। राकेश ने ऑखों से इशारा किया लेकिन मैने ध्यान ही नहीं दिया था। राकेश ने उठे लहॅगे को नीचे करने की कोशिश भी की थी लेकिन सबके सामने छू भी नहीं सकता था और सब ने देख तो लिया ही था।

यह सही है कि इन दिनों दिमाग में राकेश की याद कर के मेरी चूत रिस रही थी लगबाने के लिये बेकरार थी।

मैने राकेश से कहा "मुझे माफ कर दो मैं "

पूरा बोलने के पहिले ही राकेश कहने लगा "डार्लिंग क्या बात करती हो तुमने जानबूझ कर थोड़ी किया। चलो उसी बहाने दोस्तों को मजा मिल गया बैसे तो तुम दिखाती नहीं।

मैने कहा "धुत बेशरम"

राकेश फिर बोला "एक बात है उस दिन मेरा लंड एक दम खड़ा हो गया था और रोज खड़ा हो जाता है। उसी का इलाज करने के लिये तुम्हें बुलाया है"।

मैने कहा "कल शादी की रस्म तो पूरी हो जाने दो"

राकेश ने प्रश्न किया "मानलो मैं तुमको आज करना ही चाहॅू तो"

मैने सहज भाव से कहा "मैं तुम्हारी हॅू यह शरीर तुम्हारा है जो चाहे करो। लेकिन रीति निभाने के लिये एक दिन का सर्ब रखो न"।

तब राकेश ने कलावती और दोस्तों की सब बात मुझे बता दी और कहा "मैं तुमसे पहले किसी को नहीं भोगॅूगा। सुहागरात तो तुम्हारे साथ ही मनेगी। बोलो क्या कहती हो"।

मैने बॉहें और टॉगें फैला दी "लो मनाओ अपनी सुहागरात"।

राकेश आहिस्ता आहिस्ता चूमता हुआ आगे बढने लगा।

मैने उसके कान में रहा "मुझे जल्दी से जल्दी बापिस पहॅुच जाना चाहिये। मैं तो तैयार ही हॅू। मेरी यह गीली ही बनी रहती है। लगा दो न इसमें"।

राकेश ने एक झटके में पेटीकोट और साड़ी खींच दी। फिर अपने कपड़े उतार फेके। मैं उसके मजबूत लंड से खेलना चाहती थी वह भी मेरी चूचियों से और चूत से खिलबाड़ करना चाहता था लेकिन समय नहीं था।

मैने उसका लंड पकड़ करके चूत से सटाया और जैसे ही उसने जोर लगाया मैं चिल्ला उठी। मेरी तबियत हो रही थी लेकिन लंड का घुसना इतना आसान नहीं था जितना मैं समझ रही थी। जब भी वह लगाता मैं चिल्ला उठती और वह हटा लेता।

मैं कहने लगी कि बस रहने दो लंड चूत का मिलना तो हो ही गया है।

इस बार राकेश ने अपने थूक से लंड को गीला किया अपने हाथ से पकड़ कर घुमा कर सुपाड़ा थोड़ा

loveguruwb@yahoo.com

छेद में फॅसाया और मेरी कमर पकड़ करके पूरे जोर से पेल दिया। मैं चिल्लाती रही लेकिन वह रूका नहीं जब तक पूरा लंड अन्दर तक नहीं गुस गया।

मैं रोने लग गयी थी। उसने मेरे ऑसू पौंछते हुये कहा "डार्लिंग तुम को जो सजा देना हो दे लो"।

लंड के आगे पीछे होने से अब भी चूत के भीतर छुरी जैसी चल रही थी।

मैने कहा "अब और मत सताओ"।

वह बोला अच्छा और घुसे हुये लंड पर ही जोर लगा कर अपनी इच्छा शक्ति से उसने पानी छोड़ दिया। पानी निकलने के पहले उसने अपना लंड बाहर निकाल लिया।

जब मैं उठी तो बैड पर खून देख कर घबड़ा उठी। राकेश ने समझाया कोई बात नहीं होटल बाले को वह चादर के पैसे दे देगा और उसने वह चादर लपेटकर अपने पास रखली जो आज भी हमारे पास है।

जब मैं होटल से निकली तो शादी के पहिले ही लुट चुकी थी।

कुमुद की भावना अब राकेश के बारे में बदल चुकी थी। वह उसे और भी सराहने लगी थी।

सुनीता ने आगे कहाः

जहॉ तक कलावती का सबाल है कलावती ने खुद सुनीता को सब बता दिया और कभी अपना हक नहीं जताया। सुनीता उसकी सहायताा करती रहती थी। तीज त्योहार पर उसको साड़ी गहने आदि भी देती रहती थी। होली दिवाली वह राकेश के साथ मनाती थी। उस समय वह राकेश से चुदबाती थी। एक होली को जब राकेश उसको चोद रहा था तो राकेश का लंड फच्च फच्च कर रहा था। राकेश ने पूॅछा क्या बात है तो कलावती ने बताया कि यहॉ आने के पहले उसने अपने मर्द से होली मनायी थी जो अन्दर ही झड़ गया था। राकेश ने कहा कि अगली बार से वह होली दिवाली उ सके संग पहले मनाये फिर अपने मर्द के साथ।

आखिरी बारी मिसिज संगीता अग्रवाल की थी।

मिसिज संगीता अग्रवाल की कहानी

यह घटना शादी के काफी बाद की है। शादी के पहलें गॉव में पली बढी। वहॉ ऐसा कुछ खास नहीं घटा सिबाये इसके कि मेरी बगल में एक लड़का रहता था। जब मैं छत पर जाती थी तो वह अपना लंड खोल कर के खड़ा हो जाता था। शादी हो कर मैं शहर में आ गयी। संयुक्त परिवार था। सास ससुर थे दो जिठानियॉ थीं। मैं सबसे छोटी थी सबसे सुन्दर और सबसे पढी लिखी। परिवार में सब लोग मेरी सुनते थे लाड़ भी करते थे खासतौर पर बड़ी जिठानी। पति भी बात मान लेते थे क्योंकि चुदाई में मैं उनको खुश कर देती थी। मैं बहुत सैक्सी थी। सैक्स की कहानियॉ पढ कर मन बहलाती थी। मैं काफी दबंग हो गयी थी। जो चाहती कर लेती थी।

गर्मियों के दिन थे। बड़ी जिठानी के मैके में उनके छोटे भाई की शादी थी। बड़ी जिठानी मैके जाने

loveguruwb@yahoo.com

के लिये बहुत उत्साहित थीं। उनको लिबाने उन के भाई आ रहे थे। हमारे यहॉ का रिवाज था कि शादी व्याह के मौके पर खास रिस्तेदारों को लिबाने के लिये उनके मैके से कोई आता था। उनका वही भाई आया जिसका व्याह था। ऊँचा अच्छा खासा गबरू जबान। नाम था प्रदीप। मैके जाने के उत साह में सीढियॉ उतरते हुये जिठानी का पैर फिसला और उनके पैर की हडडी टूट गयी। वह तो जा नहीं सकतीं थीं तय हुआ उनकी जगह मैं जाउँगी। हम लोगों के यहॉ यह भी रिवाज है बल्कि इसको अच्छा भी माना जाता है। इससे यह भावना बनती है कि परिवार की सब बहुयें बहिनें हैं। उनका अपना घर ही मायका नहीं है बल्कि देवरानियों जिठानियों के घर भी उनके मायके हैं।

ट्रेन का लम्बा सफर था। ग्वालियर से दोपहर में ट्रेन चलती थी और दूसरे दिन दोपहर में जबलपुर पहुँचती थी। मेरे मन में शरारत सूझी क्यों न सफर का मजा लिया जाये। सबसे पहले मैने सम्बोधन ठीक किया। कहा "मैं तुमसे छोटी होउगी मुझे संगीता कह कर पुकारो और खुद मैं उसे प्रदीप जी कहने लगी। टू टियर में हम दोंनों का रिजर्वेशन था लेकिन दिन में तो हम लोग नीचे की बर्थ पर ही बैठे। जगह ज्यादा थी फिर भी मैं उससे सट कर बैठी। गरमी होने का बहाना कर मैंने अपना पल्लू गिरा दिया। सामने की बर्थ पर बूढे आदमी औरत बैठे थे जो आराम कर रहे थे बैसे भी मैंने उनकी चिन्ता नहीं की। मेरे बड़े बड़े मम्में ब्लाउज को फाड़ते हुये खडे थे। मैंने नीचे तक कटा भ्लाउज पहिन रखा था जिसमें से गोलाइयॉ झॉक रहीं थीं। वह दबी ऑखों से मेरे गले के अन्दर झॉक रहा था। मुझे छका कर मजा आ रहा था। सामान उठाने रखने के लिये झुकने के बहाने मैं अपनी चूचियॉ उससे चिपका देती थी। पहले तो वह सिमट जाता था पर थोड़ी देर में प्रदीप की झिझक जाती रही कि मैं उसकी बहिन की देवरानी हूँ और उसकी बहिन की जगह जा रहीं हूँ। उससे मेरी रिस्तेदारी तो थी नहीं।

उसे भी मजा आने लगा और वह अपनी बॉहों से ही मेरी चूचियॉ रगड़ने लगा। सोने का बहाना कर उसने ऑखें बंद कर रखी थीं। उसकी ऑखें खोलने के लिये मैने कहा "ओह कितनी गरमी है" और ब्लाउज के ऊपर का बटन खोल दिया। अब मेरे फूले फूले निप्पिल भी दिखायी देने लगे थे। वह टकटकी लगा कर मेरे हिलते हुये मम्मे देख रहा था। उसके टॉगों के बीच में भी हलचल दिखायी दे रही थी। और ज्यादा टीज करने के लिये मैने कहा "प्रदीप जी मैं तो अन्दर तक भीग गयी हूँ" और उसके सामने ही साड़ी में हाथ डाल कर चडढी बाहर खींच ली। वह अचकचा गया। गोद में हाथ रख कर उसने अपने उठान को छुपा लिया। मै भी मानने बाली नहीं थी। जब उ सने हाथ हटा लिये तब हाथ में पकड़ी मैगजीन को उसकी गोद में गिरा कर उठाने के बहाने उसके मोटे लंड को अच्छी तरह टटोल लिया। अब स्थिति साफ थी। उसके खड़े पोल से टैण्ट जैसा बन गया।

मैंने इशारा करते हुये कहा "ये क्या है अपने को काबू में भी नहीं रख सकते ऐसी बेशरमी करते हो"।

झेंपने के बजाये उसने चट से जबाव दिया "जब उसकी अपनी चीज सामने हो तो मिलने को बेकरार तो होगा ही"

मैने चोट की "उसकी चीज 16 तारीख तक दूर है"। 16 को उसकी शादी थी।

उसने कहा"उससे भी अच्छी चीज सामने है"।

मैंने कहा "मुँह धो कर रखो"।

लेकिन छूने छुलाने का उपक्रम करते रहे।

रात के करीब आठ बजे गाड़ी बीना पहुँची।प्रदीप सामान उठाते हुये बोला "यहाँ उतरना है"।

मैने सोचा यहाँ ट्रेन बदलनी है।हम लोग नीचे उतर आये।कुली से सामान दूसरे प्लेटफार्म पर ले जाने की बजाये प्रदीप सामान स्टेशन से बाहर निकाल ले गया।एक ऑटो से हम लोग कहीं चल दिये।मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था।जब ऑटो एक होटल के सामने रूका तो मेरी समझ में कुछ आया।

प्रदीप बोला "आज की रात यहीं रूकेंगे"।

उसने अचानक प्रोग्राम बदल दिया था।नहले पर दहला लगा दिया था।कहाँ तो मैं मजा चखा रही थी अब वह मजा चखा रहा था।

मैने पूछा "यहाँ क्यों रूक गये हैं" तो मुस्कराके बोला "तुमको ज्यादा गरमी लग रही है उसको निकालना है"।

मैं तो सोच भी नहीं सकती थी कि प्रदीप ऐसा कर सकता है।

कमरा उसने मिस्टर मिसिज प्रदीप के नाम से बुक कराया।खाना कमरे में ही मँगाया।अपने लिये शराब भी।मैंने शराब के लिये मना कर दिया।मैने कहा मैं नहा लूँ तो बोला "संगीता डार्लिंग एक राउण्ड नहाने के पहले हो जाये फिर नहाने के बाद में।आज तो रात भर जश्न मनायेंगे"।मुझे पकड़ कर मम्मे दबाते हुये बोला"तुम्हारे इन रस कलसों ने ट्रेन में बड़ा तड़पाया है इनसे तृप्ति तो कर लूँ"।

उसने मेरा ब्लाउज और अँगिया उतार फेकी।कस कस के कुच मर्दन करने लगा।मैं धीमे धीमे आवाजें करने लगी।चूचियाँ मेरी कमजोरी हैं।उन पर मुँह रखते ही मैं काबू में नहीं रहती ।कोई भी मेरी इस कमजोरी को जानकर मुझे चोद सकता है।प्रदीप ने मेरे निप्पिल मुँह में लिये तो मैं उत्तेजना से 'उँ ह उँ ह' करने लगी और उसका लंड थाम लिया।उसने नाड़ा खीच कर मुझे पूरा नंगा कर दिया।और खुद ही अपने सब कपड़े उतार फेंके। उसका लंड देख कर मैं दंग रह गयी।खीरे की तरह मोटा और लम्बा तना हुआ खड़ा था अग्रवाल साहब से दुगना।कमर में हाथ डाल कर वह मुझे बैड पर ले गया।चित्त लिटा कर मेरी टाँगें खोल दीं।मैंने सोचा अब वह डालेगा।मैं लेने को उत्सुक हो गयी।लेकिन मेरी चूत की तरफ वह देखता ही रह गया।

उसके मुँह से निकला "ओ माई गॉड क्या डबलरोटी की तरह फुद्दी है और ये चूतड़ों की गोला इयाँ।मैने तुम्हारी जैसी औरत देखी ही नहीं है

मैने पूछा "प्रदीप जी कितनी देखी हैं इस तरह"

वह हँसने लगा "होने बाली बीवी की देखी है दो भाभियों की देखी है और ऐसी ही एक दो और देखी है"।

संगीता जान गयी कि वह खेला खाया हुआ है।

मैने इस बीच उसका लंड पकड़ लिया था जो मुट्ठी में भी नहीं आ रहा रहा था।चूत की तरफ उसे खींचा तो वह बोला "इसकी पहली जगह तो यहॉ है" और लंड उसके होठों से सटा दिया।मैने मुँह एक तरफ फेर लिया बोली "यहॉ नहीं लूँगी"।

प्रदीप बोला "चलो तुम नहीं लेकिन मैं तो अमृतपान करूँगा"।

वह बैड के नीचे ही बैठ गया।दोनों टॉगें कंधों पर धर लीं और अपना मुँह मेरी चूत के छेद पर रख दिया।मुझे उसकी भी आदत नहीं थी।मैने उसका मुँह हटाना चाहा तो उसने और जोर से चिपका लिया।

मैं छुड़ाने के लिये टॉगें उसकी पीठ पर मारने लगी "ये मत करो"

वह मार सहता गया ।उसने मेरी क्लिटोरी को अपने होठों में दबोच लिया और चूसने लगा।मैं एकदम आनन्द में भर गयी।टॉगों का मारना बंद हो गया।मैं बुदबुदाये जा रही थी "ओ मॉ इ स त र ह म त क रो ओ प्र दी प इ स त र ह "

मेरे शब्दों का उल्टा ही मतलब था।मैं आनन्द मे भरी हुई थी और चाहती थी कि वह करता ही रहे।

उसने अपनी जीभ छेद में डाल दी तो मैने चूत हवा में उठा दी।प्रदीप के सिर पर हाथ रख के कसके दबा लिया और अपनी चूत उसके मुँह से रगड़ने लगी।मेरे सारे शरीर मे करैंट दौड़ रहा था।

बोले जा रही थी "प्रदीप चाटो इसे और कस के चाटो पूरी जीभ अन्दर कर दो करते रहो न"

प्रदीप ने जीभ निकाल के एक उँगली अन्दर पूरी डाल दी और अन्दर बाहर करने लगा।

मैं एकदम एक्सप्लोड हो गयी चिल्ला उठी "ओ ाे ह ह मॉ ऑ ऑाााााााााााा क्याााााााााााााा करररररररररररररररर दियाााााााााााााााााााााााा"

बड़ी देर तक झड़ती रही।यह मेरा पहला एक्सपेरियन्स था।मैं खलास हो चुकी थी।प्रदीप का अभी तना हुआ था।

प्रदीप मेरी बगल में आ कर लेट गया।उसेन मेरी चूची पर हाथ रखा तो मैंने हटा दिया।अब मेरी तबियत नहीं थी।मैं एक रात में एक बार ही चुदाई कराती थी।प्रदीप ने धीरे धीरे बताना चालू किया कि किस तरह उसने अपनी बड़ी भाभी की ली थी।जब कहानी क्लाइमैक्स पर पहुँची तो मैने महसूस किया कि मेरी चूत में सरसरी होने लगी है और मैं प्रदीप के लंड से खेल रही हूँ।प्रदीप चहता था कि उसके लंड से खेलती रहूँ लेकिन मैं उसके उस भारी हथियार को अपनी चूत में लगबाना चाहती थी जो बड़ा गरम हो रहा था।आखिर वह मान गया।मैने घुटने मोड़ कर टॉगें इतनी फैला लीं जितनी फैल सकती थीं।हाथ से पकड़ कर सुपाड़ा चूत के अन्दर किया तो बड़ी मुश्किल से घुसा।उसने जोर लगाया तो थोड़ा और अन्दर घुसा।मैं मना कर रही थी कि प्रदीप ने और धकेल दिया।लेकिन लंड पूरा न जाके बीच में फँस गया।यह चूत कितनी बार पिल चुकी थी लेकिन उस लंड को नहीं ले पा रही थी।उसका लंड खूब गरम हो रहा था।तकलीफ हो रही थी लेकिन मैं झेलने को तैयार थी।

मैने कहा "क्या देखते हो राजा करदो पूरा अन्दर एक बार में"।

और कहने की जरूरत नहीं थी।प्रदीप ने मेरे घुटने थामे और एक झटके में मूठ तक घुसेड़ दिया।मैं चाहती थी कि वह थोड़ा ठहरे लेकिन उसने मौका नहीं दिया।उसने निकाला और फिर अन्दर कर दिया।

चूत की दीवालों को रगड़ता हुआ उसका लंड घुसता था तो मैं आनन्द से भर जाती थी।निकलता था तो फिर लेने के लिये चूत उठा देती थी।वह धकाधक पेल रहा था।मैं उसे उत्साहित कर रही थी।

हर चोट पर सीत्कार निकल जाती थः "ऊॅ ऊॅ ह ऊॅ ञ्ञ्ञ्ञ्हहहहह मॉअअअअअआााा इतने जोर से क्याौओंओंाााा मााााररररतेएएएए हो"

वह भी कहता "ले ऐऐ ऐ ब हू हू हू त त ग ररर मी लगग ररर ही थी न तुझझ को ओ ओ "

फिर चोट पर "ओओ मइइइइयाााा मै मैंऐं ऐ तो मररररर जाााउॅउॅगीीीीीीीीीीीीीी"

और कस के धपाक "ले एएएए इस को ले ते री रीीीीी सासा रीीीीी चूऊऊऊऊऊत की गरररररमीीीी निकललल जाााााााायेयेये"

मेरी चूत ने न जाने कितनी चोटें खायीं।

अचानक एक चोट ऐसी पड़ी कि चूत हवा में उठ गयी मैने कस के उसको जकड़ लिया "औ ाे ाे मैं क्याा करूरूरूरू मैंऐंऐं तोओओ गईईईईई"

प्रदीप "लेऐऐ ऐ मै भी अअआाााायाााााा"।उसने फाइनल स्ट्रोक दिया और अपना गाढा गाढा रस छोड़ दिया।

इसके बाद मैं नहाने चली गयी।प्रदीप भी साथ ही नहाया।नहाते समय फिर हम लोग गम हो गये।उस रात कई बार मैं चुदी यहॉ तक की पीछे वाले छोद में भी उसने डाला।

सुबह उठे तो मैने प्रदीप को चिढाया "हाय राम तुमने मुझे खराब कर दिया"।

दूसरे दिन बगैर रिजर्वेशन के बड़ी मुश्किल से हम लोगों को ट्रेन में घुसने भर की जगह मिली लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं थी।

जब मौका मिलता मैं उससे कहती"हाय राम तुमने मुझे खराब कर दिया"।

आने के पहले मैं एक बार और उसके सुपर डुपर का आनन्द लेना चाहती थी।उसको भी कोई ऐतराज नहीं था।अपनी नवेली से तो वह सुहागरात मना ही चुका था और प्रदीप के ही शब्दों में उसके मुकाबले में सुपर थी।लेकिन शादी की भीड़ में कोई सुनसान जगह नहीं मिल पा रही थी।एक दिन उसने बताया कि साथ वाले उसके घर में भूसा भरा रहता है।अगर मैं चाहूॅ तो वहॉ हो सकता है।भूसा क्या मैं तो उससे लगवाने के लिये कहीं भी तैयार थी।आने के एक दिन पहले भूसे पर लिटा कर उसने मेरी मस्त चुदायी की।

loveguruwb@yahoo.com

## 10

### सुनीता और शिशिर

होली के दूसरे दिन शिशिर जब लंच से लौटा तो सुनीता भाभी का फोन पर मैसेज था जितनी जल्दी हो घर आओ। शिशिर सब शुभ हो कि कामना करते हुये सुनीता के घर जल्दी से जा पहुँचा। सुनीता भाभी ने दरवाजा खोला तो वह खुबसूरत साड़ी में सजी धँजी खड़ी थीं।

शिशिर ने पूछा कि क्या बात है भाभी तो बड़ी अदा से बोलीं 'देवरजी तुम कह रहे थे कि भाभी होली नहीं मनाओगी तो मैने सोचा चलो तुम होली मना लो। तुम्हारी शर्त पूरी करने के लिये बड़ी मुश्किल से कल अपने को तुम्हारे भइया से बचा के रक्खा है आज तो वह छोड़ेंगे नहीं इसलिये अभी मना लो'। वह एक प्लेट में से मुट्ठी में गुलाल ले कर आगे बढीं।

शशिर बोला 'भाभी इतनी मँहगी साड़ी खराब करोगी' लेकिन इसके पहले ही उन्होंने शिशिर के चेहरे पर गुलाल मल दिया। शिशिर ने उनको पकड़ लिया और अपना गुलाल लगा गाल उनके गुलाबी गाल पर रगड़ने लगा। फिर उसने उन्हें बाहों में लेकर उनके रसीले ओंठों पर चूमा और अपने ओंठ गढा दिये। फिर उन्हें प्यार से चूसने लगा। सुनीता भाभी उससे चिमट गयीं और चुम्बन का जबाव पूरे जोर से देने लगीं। कुछ देर वह ऐसे ही चिपके रहे फिर भाभी ने उसकी पीठ के ऊपर हाथ ले जा कर शिशिर का सिर पकड़ कर उसे नीचे को खींचा। शिशिर का मुँह उनके कंधों को चूमताा हुआ सीने पर जा पहुचा। वह अपने गालों का गुलाल सुनीता भाभी के उभारों के ऊपर रगड़ कर ब्लाउज पर लगाने लगा। सुनीता को करैंट सा लगा। वह उत्तेजित हो उठी निपिल सख्त हो गये। शिशिर को एकदम पता लग गया। उसेन दायॉ हाथ सुनीता की कमर में डाल के सामने से चिपका लिया और बॉये हाथ से उनके ब्लाउज के बटन खोल दिये। सुनीताा ने पीछे हाथ करके ब्रेसियर की हुक खोल कर के उसको अलग कर दिया। उसके सुडौल गदराये उरोज सामने थे जिनके ऊपर गहरे पिंक फूले हुये निपिल तने खड़े हुये थे। शिशिर उनको देखता ही रह गया। सुनीता भाभी ने टोका 'क्या देख रहे हो'। शिशिर सच बोला 'भाभी इतनी खुबसूरत गोलाइयॉ नहीं देखी'। सुनीताा ने चोट की 'कितनों की देखी हैं।

शिशिर का खड़ा हुआ लंड सुनीता की चूत को चुभ रहा था। उसने हाथ बढा कर उसको पकड़ लिया। प्रतिकिया के रूप में शिशिर ने सुनीता भाभी की दॉयी चूची मुँह में ले ली। सुनीता के मुँह से सीत्कार निकल गयी। उन्होंने सारा भार शिशिर के ऊपर डाल दिया। उन्हें बाहों में सँभाल न लिया होता तो गिर जातीं। सहारे से बैडरूम में ले जाकर शिशिर ने पलंग पर लिटा दिया। उन्होंने गले में बाहे डाल कर अपने ऊपर खींचा।

शिशिरने कहा 'पहले अपने नीचे का खजाना तो दिखाओ'।

शोख अदा से बोलीं 'पहले खजाने की चाभी देखेंगे'

इसके साथ ही उन्होंने मेरे पैण्ट के बटन और जिपर खोल डाले और अण्डरवियर समेत पैण्ट पेरों के नीचे गिरा दिया। कमीज उतार कर वह एकदम नंगा हो गया। उसका लंड फनफनाकर कर खड़ा था।

loveguruwb@yahoo.com

'उई ई ई ई मांाााा इतना बडाााा और मोटाााााा है कैसे समायगा' उत्तेजना में सुनीता भाभी की जवान लड़खड़ा रही थी।

शिशिर ने साड़ी की ओर हाथ बढाया और एक झटके में साड़ी खींच दी और सिल्किन पेटीकोट का नाड़ा खोल लिया। उन्होंने कुछ कहे बगैर अपने चूतड़ उठा दिये और आसानी से खिंच कर के पेटीकोट नीचे गिर गया। उन्होने कीमती पैण्टी पहिन रखी थी। एक बड़ा सा धब्बा चूत के पानी से फैल गया था। शिशिर पैण्टी उताारने लगा तो बोली'इसे पहने रहने दो' लेकिन उतारबाने में उज्र नहीं किया। क्या नजारा था। संगमरमरी वदन सामने था। भाभी की पतली कमर, मॉसल चूतड़ फूली हुई चूत बड़ी गोल गोल ऊँचाइयॉ और मदहोश मुश्कान आमंत्रित कर रहीं थीं। शिशिर मतबाला सा सुनीता भाभी की ओर बढा और उन्होंने हाथ फैला कर उसको समेट लिया।

उसेन उनकी दॉये निपिल को मुॅह में ले लिया और बॉयी चूची को हाथ से मसलने लगा। भाभी 'सी सी' कर उठीं। उन्होंने मुट्ठी में लंड थाम लिया और चूत के ऊपर फेरने लगीं। शिशिर ने पोजीशन बदल दी और बॉई निपिल को मुॅह में लिया तो भाभी ने एक लम्बी आवाज कीः

'आाााााााहहहहह'

कानों में फुसफुसयीं 'देवर जी अब क्यों तड़पा रहे हो'

साथ ही दोनों हाथों से उसका सिर पकड़ कर नीचे को खीचने लगीं। शिशिर नीचे खिसकता गया। भाभी ने लंड की उत्सुकताा में अपनी टॉगें चौढी कर ली। लेकिन शिशिर खिसकता ही गया। वह जाघों तक खिसक आया। भाभी की टॉगें दोनों कंधो पर आ गयीं। उसने भाभी की चूत पर मुॅह रख दिया। सुनीता भाभी अचकचा उठीं 'देवर जी ये क्या करते हो' और उन्होंने अपनी हथेली चूत के ऊपर रख ली। उनके लिये यह नयी बात थी। शिशिर ने एक हाथ से बल के साथ उनका पकड़ा और हटा दिया। दूसरे हाथ से उनकी चूत की फॉकें खोली और अपना मुॅह गड़ा दिया। भाभी ऐतराज में अपनी दोनों टॉगें उसकी पीठ पर मारने लगीं और हाथ से शिशिर का सिर उठाने लगीं। लेकिन शिशिर का मुॅह उनकी चूत से चिपक गया था सो हटा ही नहीं। वह चटकारे लेकर उनकी चूत के रस को पी रहा था। जैसे ही उसने अपनी जीभ भाभी की क्लिटोरी के ऊपर रक्खी उनका पैर मारना एकदम रूक गया। आवाज करने लगीं

'ममममपफफफ ओ माईईईई '

उठाने की जगह उन्होने उसके सिर को कस के चूत में दबा लिया। शिशिर ने भाभी की क्लिटोरी को दोनों ओठों के बीच ले लिया। सुनीता 'ओहहह मैं अब और नही रूक सकती' ' मुझे कसके दबा लो लो लो ओ ओ मै तो गई ' सुनीता भाभी ने चूत उठा कर के जोर से उसके ओठों से चिपका दी और काफी देर तर उनकी चूत में कॅपकॅपी बनी रही।

शिशिर भाभी की बगल में एक करबट लेट गया और हाथ बढा के उनको खींच लिया। भाभी उससे चिपक गयीं और सीने में सिर छुपा लिया। शिशिर ने उनके सिर पर हाथ रख कर और कसके चिपका लिया। थोड़ी देर वह इसी तरह पड़े रहे एक दूसरे में मग्न। भाभी फुसफुसायीं 'देवर जी तुम्हारे

loveguruwb@yahoo.com

प्यार करने का तरीका भी निराला है'

'हॉ इसमें टॉगें पीठ पर खानी पड़ती हैं'

भाभी ने सिर उसकी छाती पर रगड़ा 'चलो हटो कहीं ऐसा भी कोई करता है'

'आपको मजा आया'

भाभी ने हॉमी में सिर हिला दिया। बोलीं 'देवर जी ये बताओ कुमुद इतनी अच्छी लम्बी सुन्दर है फिर तुम मेरे पीछे क्यों पड़े रहते धे।

शिशिर तुरन्त बोला 'भाभी आपने अपने को पूरे आईने में देखा है आप मै नारोक पाने बाली अपील है। मैं काबू में ही न रह पाता धा। फिर कुमुद सेक्स मै चुलबुली नही है।

वह फिर बोला 'भाभी आपकी कशिश में कितने खिचे रहते होंगे'

सुनीता भाभी बोलीं 'जानती हूॅ लेकिन राकेश को पूर्ण समर्पित हूॅ तुम्हारे अलाबा'

शिशिर ने आनन्द से उन्हें भींच लिया। आहिस्ता से एक निपिल मुॅह में लेना चाही तो उन्होंने मना कर दिया 'अब नई'

वह शान्त हो गयीं थीं।

शिशिर बोला 'बस भाभी सीने पर मूह रख के लेट ने दो'

वह चित्त हो गयीं और बड़े प्यार से उसका गाल अपने बॉये उभार पर दबा लिया।

शिशिर गाल और दबाता गया फिर धीरे धीरे रगड़ने लगा। धोड़ी देर बाद उसने बगैर दबाव के अपनी दॉई हधेली उनके बॉये सीने पर रख दी। भाभी ने मना नहीं किया। उन्हें अच्छा लग रहा धा। वह अब अपनी तरफ से उसके सिर पर दबाव बढातीं जा रहीं धीं। शिशिर ने आहिस्ताा से अपने ओंठ खोल कर दॉयें निपिल को अन्दर कर लिया। भाभी ने झुक कर उसके माधे को चूम लिया। सुनीता भाभी अब गर्माने लगीं धीं। मैने ओंठों मे। निपिल कसके दबोच ली और चूसने लगा।

वह कराहीं 'उईईईईईईई मॉाााााा तुम तो काटते हो'

लेकिन सिर को कस के चूची पर दबा लिया। अब मे दॉयी चूची को मजे से चूस रहा धा और बॉयीं को कसके मसल रहा धा। वह अब चूतड़ हिलाने लगीं धीं। शिशिर ने दॉया हाध चूची से हटा कर उ नकी चूत पर रख दिया। उन्होंने दोनो जाघों से कस के दबा लिया। उसका सिर दूसरी चूची की तरफ करतीं हुयीं बोलीं 'इस को चूसो न'

शिशिर ने दूसरी चूची मुॅह में ले ली और दो उॅगलियों से चूत की दराज खोलते हुये तीसरी उॅगली छेद में डाल दी। चूत गीली हो रही थी।

भाभी ने चट से अपनी जाघें खोल दी बोलीं 'पूरी अन्दर डाल दो'

अपने दॉयें हाध से उसका फर्राया हुआ लंड मुट्ठी बन्द कर लिया 'ओ माई गाड ये तो मेरे हाध में भी नही आ रहाा है'

loveguruwb@yahoo.com

शिशिर उॅगली अन्दर बाहर करने लगा। उनकी बुरी तरह रिसने लगी धी। बाहर पानी निकल रहा धा।

'हाय अन्दर तक घुसेड़ दो ने जल्दी जल्दी से' वह पूरी तरह उत्तेजित धीं।

वह कसकस के उसके लंड पर मुट्ठी चलाने लगीं धीं।

शिशिर बोला 'भाभी इसकी जगह कोई और भी होती है।

'तो डालो न उस जगह'

शिशिर के कुछ कहने के पहले उन्होंने पलट के अपनी चूत उसके लंड के ऊपर कर ली और हाध से लंड पकड़ कर सुपाड़ा चूत में घुसेड़ लिया।

अब शिशिर के पास और कोई चारा नही धा। उसने सुनीता भाभी को पलटा। उनकी टॉगों के बीच में घुटनों को बल बैठ गया। उन्होंने उतावली में टॉगें पूरी चौड़ा दी और चूत ऊपर उठा दी। चूत की पंखुड़ियॉ अलग अलग धीं गुलाबी छेद खुला हुआ धा अन्दर पानी चमक रहा धा। शिशिर ने लंड का सुपाडा चूत के मुॅह पर रखा और धीरे धीरे घुसाने लगा।

सुनीता भाभी की सहमी सी आवाज निकली 'देवर जी आहिस्ता से डालियेगा बहुत बड़ा और मोटा है'

लेकिन उनकी चूत लंड के पुरा का पूरा लील गयी। भाभी के मुॅह से निकला 'हा य'

उसेन बाहर किया और घच्च से अन्दर। वह और जेार से 'हा य' कर उठीं।

उसेन फिर बाहर किया फिर और जोर से घच्च। उनकी सीत्कार और ऊॅची हेा गयी।

शिशिर का सीधा खड़ा लंड सुनीता भाभी की चूत में सड़ाक से पूरा घुस जाता धा।

जैसे जैसे घच्च घच्च की स्पीड बढती गयी भाभी की 'हाययययय उईईईईई माााााााा मररररररी' की सीत्कार भी।

अकुछ देर तक झटके लगाने के बाद शिशिर पलंग के नीचे खड़ा हेा गया। सुनीता भाभी केा दोनों टॉगेां से खींच कर पलंग के किनारे कर लिया। उनकी टॉगें चौड़ा कर उनके बीच में खड़ा हेा गया। अब खड़े खडे उसका लंड भाभी की चूत के सामने धा। उसने लंड चूत के मुॅह पर लगाया और कहा 'अपनी दोनों टॉगें मेरी कमर पर बॉध लेा। भाभी की दोनों चूचियों को दोनों हाधों से मसलते हुये शिशिर ने एक चोट में सड़ाक से लंड अन्दर कर दिया तो भाभी हिल गयीं मुॅह से चीख निकल गयी।

शिशिर ने चूत के सामने काफी बाहर तक लंड निकाल कर एकदम चोट मारी। भाभी और जोर से चीखीं 'ओ मा ैम मर जाउॅगी'

उन्होंने कस के शिशिर के कंधे दोनों हाधों से जकड़ लिये और अपना मुॅह उसकी छाती में गड़ा लिया।

शिशिर ने जब चोट मारी तो वह बुदबुदायीं 'शिशिर ये तुम्हारी है जैसे चाहे लेा इसको'

पहली बार उन्होंने उसे शिशिर कह के बुलाया धा।

शिशिर धकाधक चोद रहा धा। उसका लंड चूत की गहराइयों तक जा रहा धा।हर चोट में लंड की जड़ चूत के ऊपर धप्प से पड़ती धी।

भाभी आपे में नहीं धीं 'आाााह आााााह ऊँऊँहहहहहहह हाााााय ऊईईईईईईइ ओ शिशिर ऐ तुम्हारी है फाड़ डालो इसको उफ्फ्फ्फ ओ शिशिर'

हर झटके में उसी वेग से सुनीताा भाभी बढ बढ के लंड को झेल रहीं धीं।जोरों से चूत से फच्च फच्च की आवाज निकल रही धी।

अचानक भाभी ने उसकी कमर में टॉगें एकदम जकड़ लीं 'ओ मैं और नही ले सकती मैं तो गईई ईईईईई मेरे शिशिरररररर'

भाभी ने अपना ज्वालामुखी उगल दिया।उनकी चूत इतनी जोर की कॉपी कि शिशिर भी न ठहर पाया 'भा भी ईईईईईई मै भी आयाााााााा ये लोओओओ'

उसने गहराई तक ले जाके पानी छोड़ दिया और देर तक छोड़ता रहा।जब उसने अपना लंड बाहर निकाला दो भाभी की चूत से गाढा गाढा सफेद फैन सा फैलता रहा।उन्होंने पैण्टी से उसे पैाछा भी नहीं जैसी उनकी आदत धी।निढाल पड़ी रहीं।शिशिर ने उनका हाध पकड़ा तो शिकायत के लहजे में बोलीं

'देखो तुमने इसकी क्या हालत कर दी है।हधौड़ा सा चलाते हो।मैं अब राकेश को रात में कैसे दूँगी।इसे देख कर उन्हें शक हो गया तो।

शिशिर ने कोमलता से उनका हाथ धाम लिया। सुनीता भाभी ने उसे दोनौं बाहो में लाड़ से भर लिया और सीने में छुपाा लिया।

## 11

## सुनीता

होली के आनन्द के बाद जब भी शिशिर की मुझे भोगने की तबियत होती कह देता “भाभी परॉठे सेकने हैं **24** घंटे का उपवास रखना”।जब मेरी तबियत मचलती शिशिर से कहती “हथौड़ा लूगीं”।मैं पूरी तरह सन्तुष्ट थी।राकेश भरपूर चोदता था।स्पेशल चुदाई शिशिर से कराती रहती थी।ग्रुप की महफिल के बाद खासतौर पर मुझे हथौड़े की जरूरत पड़ती थी।शिशिर का व्यवहार मेरी तरफ कोमल बना हुआ था केवल चोदते समय वह कोई लिहाज नहीं करताा था।मै बहुत खुश रहती थी।

गर्मियॉ शुरू हो गयीं थीं।गर्मियों में **10** या **15** दिन के लिये या तो हम लोग रजनी के यहॉ जाते थे या रजनी और रूपेश हमारे यहॉ आ जाते थे।इस बार वह लोग हमारे यहॉ आये।रजनी और मैं कॉलिज के जमाने की सहेलियॉ थीं पक्की दोस्त।एक दूसरे के बारे में सब कुछ जानती थीं।हम

loveguruwb@yahoo.com

दोनों ही खुबसूरत समझी जाताी थीं। रजनी मेरे से ज्यादा लंबी थी और दुबली भी। मेरी बॉडी शुरू से ही सॉचे में ठली हुई थी। रजनी तबियत की मस्त थी। खुल कर सैक्स की बातें करती और आगे बढने के लिये भी तैयार। मैं इस बारे में बिल्कुल पक्के खयालें की। अब रजनी के सीने और कूल्हों पर मॉस चढ गया था लेकिन वदन उसका इकहरा ही था आकर्षक। मेरी शादी रजनी से दो साल पहले हो गयी थी। रजनी की शादी हुई तो उसके पति रूपेश मेरे ऊपर दीबाने हो गये। हमें चोदने के लिये वेचैन रहने लगे। रजनी को भी उन्होंने तैयार कर लिया। शादी के थोड़े दिनों बाद ही रजनी ने मेरे से कहा "रूप तेरी चूत की सैर करना चाहता है बदले में राकेश को मैं अपनी नयी नवेली का रस चखा दूँगी"। मैने एकटूक जबाव दिया "मैं राकेश को पूरी तरह समर्पित हूँ ऐसा कुछ भी नहीं करूँगी"। जानबूछ कर मैंने पता नहीं किया कि राकेश को रजनी ने रसपान कराया या नहीं। रजनी के आने पर राकेश की खुशी देख कर लगता था कि वह स्वाद चख चुके थे। इस बात पर इसके बाद परदा पड़ गया था।

जैसे ही रजनी मुझसे मिली कह उठी "लगता है तुम्हें यह जगह रास आ गयी है बडी खुश दिखती हो"। जल्दी ही रजनी और रूपेश सबसे घुलमिल गये। शिशिर से रूपेश की भी पटने लगी। ग्रुप की महफिलों में भी दोनों ने खुब बढ बढ के भाग लिया। रजनी ने तो ऐसे किस्से सुनाये कि उस रात जरूर लोगों ने बीवियों से जम कर कसर निकाली होगी। ज्यादा दिन तो सैर सपाटों में ही निकल गये। जब तब शिशिर और कुमुद या अकेला शिशिर भी सामिल हे जाते थे। जो बात कोई जान पाया था रजनी इतनी जल्दी भॉप गयी बोली "अब तुम्हारी खुशी का राज समझ में आया। शिशिर से इश्क लड़ाया जा रहा है"। मैं लाल हो गयी बोली "तुम भी रजनी गजब हो शिशिर मेरा देवर है"। रजनी बोली "सब जानती हूँ"।

उसके बाद मैं कुछ चौकन्नी रहने लगी। लेकिन इस बीच ही शिशिर परॉठे सेकने की फरमाइश कर बैठा। मैने समझाया कि अभी रजनी रूपेश हैं लेकिन न्हीं माना। दिन में ही समय निकाल कर उसने मुझे बहुत ही जबरदस्ती से चोदा। मैं त्राहि त्राहि कर उठी। चूत पर इतनी चोटें पड़ी थी कि मैं ढीक से चल भी नहीं पा रही थी। अपनी दोनों टॉगें फैला फैला के चल रही थी। शाम को रजनी ने देखा तो मेरी चूत पर चिउँटी काटी। मेरे मुँह से जोर से शी निकल गयी।

रजनी बोली "इसकी कसके रगड़ाई हुयी है क्या"। लेकिन राकेश तो ऐसा नही करता। क्या बात है शिशिर से लगबा के आयी हो"।

उसने मेरी चोरी पकड़ ली थी। मैं बोली "क्या करूँ रजनी वह माना ही नहीं"।

रजनी ने उलाहना देते हुये कहा"जब रूप ने मॉगी थी तो साफ मना कर दिया था कि मैं तो बस राकेश को ही देती हूँ"।

मैं"हॉ मैं केबल राकेश की हूँ। शिशिर स्पेशल है हमारा ही"।

रजनी"अरे जाओ ऐसे लोग जिस किसी पर भी फिसलते रहते हैं"।

मैं "न रजनी यह केबल मेरा और शिशिर का सम्बन्ध है भाभी और देवर का"।

loveguruwb@yahoo.com

रजनी “अगर मैने शिशिर को फॉस के दिखा दिया तो”।

मैं “तो जो चाहोगी दूँगी।लेकिन क्या सबूत दोगी”।

रजनी “शिशिर का अण्डरवियर दूँगी मेरी चूत के रस से पौछा हुआ चाहो तो सूँघ के देख लेना”।

रजनी को अब एक मिशन मिल गया शिशिर को सिड्यूश करने का।

**12**

रजनी

सुनीता को उकसाना तो एक बहाना था। सुनीता को देख कर मेरी चूत भी शिशिर से बैंग कराने के लिये बेकरार हो रही थी।शर्त के बाद मुझे खुला मौका मिल गया।डोरे डालने के लिये मैंने स्त्री सुलभ हथियार का स्तेमाल किया जिसमें शरीर की भाषा नैनों की भाषा और प्रेम की भाषा सामिल थी।मैं बड़ी सेक्स भरी आवाज में उससे बातें करने लगी।नैन में रस भर के कहती “मैं भी तो तुम्हारी भाभी हूँ ।सुनीता जैसा मेरा भी तो अधिकार है”।कभी वदन को ऐंठ कर कुटिलता से कहती “रात को तो मेरी हालत खराब हो गयी”।आफिस फोन कर देती कहीं ले जाने या लंच पर ही ले जाने के लिये।रैस्ट्रारैंट में बड़े टाइट कपड़े पहिन कर जाती जिनसे मेरी निप्पिल के आकार साफ दिखायी देते चूतड़ के उभार साफ नजर आते।बात बात पर उस पर गिर पड़ती कंधे पर सिर रख देती।साथ में सेक्स भरी बातें भी करती जाती।इन सब का असर यह हुआ कि शिशिर मेरे से बहुत खुल गया।दो मतलब लिये हुये सैक्स भरा मजाक भी करने लगा।जल्दी ही एक दिन शिशिर के ऑफिस में ही मैने हाव भाव से साफ जाहिर कर दिया कि अब क्यों देर करते हो लगाओ न मुझे में और उससे सट कर मैने उसका हाथ पकड़ लिया।लेकिन शिशिर पीछे हट गया। उसने एक दम हाथ नहीं झटका न ही मुझे धकेला बरन बाहर चलते हुये बोला “चलो घर चलें कुमुद इंतजार कर रही होगी”।

मैं समझ गयी कि लोहा पूरी तरह गरम करने के लिये शारीरिक तरीके से बढने की जरूरत है।मैं शरीर का मजा देने के लिये मौके की तलाश में थी और वह मौका मुझे मिल गया।शहर में नुमायश लगी थी।सुनीता राकेश शिशिर कुमुद मैं रूप सब लोग गये।मैं टाइट सलवार सूट में थी।एक जगह स्टेज पर गाने बजाने हो रहे थे।लोग घेरा बना के जमा थे। अँधेरा हो रहा था और वह जगह ज्यादा ही अँधेरी थी।हम सब लोग भी गाने सुनने के लिये खड़े हो गये।मैं शिशिर के सामने खड़ी हो गयी।अनजानी सी पीछे हुई और अपने पीछे का हिस्सा उसके सामेन से चिपका दिया।मेरी चूतड़ों की गोलाइयॉ उसकी जॉघों में पूरी तरह फिट हो गयीं थीं।मैं दरार में उसके सख्त होते हुये लंड को महसूस करने लगी थी कि तभी वह बहॉ से हट गया और सुनीता के पीछे जा कर खड़ा हो गया।सुनीता के चेहरे पर एक मुस्कान उभरी जो मुझे चिड़ाने के ल्यि भी थी और शिशिर की उसको लंड लगाने की मक्कारी पर भी।

loveguruwb@yahoo.com

मैने सीधी डोज देने की ठान ली क्योंकि मेरे वहॉ रहने में कुल छह दिन और रह गये थ जिनमें मुझे अपनी मनमानी करनी थी। अगले ही पिकनिक थी। मैने उस दिन साड़ी पहनी लेकिन अन्दर पैण्टी नही पहनी। पिकनिक में चादर पर मैं शिशिर के सामने बैठी घुटनों को ऊपर करके। जब देखा कि लोग नहीं देख रहे हैं तो अपनी टॉगें थोड़ी चौड़ी कर दीं जिससे अन्दर का नजारा दिख सके। मैने नोट किया कि शिशिर के ऊपर असर पड़ा है। वह दबी ऑखों से मेरी साड़ी के अन्दर झॉक रहा था। ऐसा मैं कभी कभी ही कर पा रही थी क्योंकि इतने लोगों के बीच में बैठी थी लेकिन उनको शक भी नहीं हो सकता था कि मैने पैण्टी नही पहनी है। अपकी बार मौका मिला तो मैने टॉगें पूरी खोल दी इतनी कि मेरी चूत का मुॅह भी खुल गया होगा। अब नजारा उसके सामने था और वह भी जैसे सब कुछ भूल कर आश्चर्य से घूरे जा रहा था। मैं भी उसकी तरफ मक्कारी से मुस्करा रही थी।

शिशिर सोच रहा था 'ओ माइ गॉड कैसी फूली फूली रसभरी चूत है सुनीता भाभी से कम नही'

सुनीता की नजरों से यह खेल छुपा न था। जब सुनीता ने शिशिर को रजनी की चूत को घूरते हुये देखा तो हैरानी भी हुई और शिशिर पर गुस्सा भी आया। उसने आवाज दे कर शिशिर को कार से खेल का सामान लाने को भेज दिया।

जब अकेले में शिशिर भाभी भाभी करता हुआ सुनीता के पास आया तो सुनीता बोली "देवर जी बड़ी लार टपक रही थी। ये समझ लेना कि कहीं और मुॅह मारा तो अपनी भाभी से परॉठे कभी भी नहीं खा पाओगे"।

मैने सुनीता की चालाकी जान ली थी जब उन्होंने शिशिर को हटा दिया। उसके बाद उन लोगों को कुछ घुसपुस करते हुये भी देखा। समझ गयी कि मान मनौअल चल रहा होगा क्योंकि सुनीता को अपना कण्ट्रोल खतम होतो हुये दिख रहा है। मुझे अपनी चूत के पावर पर भरोसा था। जानती थी ऐसी चूत देखने के बाद कोई अपने को काबू में नहीं रख सकता। उस रात मैने उधेड़बुन करके कैसे भी शिशिर से अकेले में मिलने का समय निकाला।

मैं शिशिर से झूटी नाराजी दिखाती हुई बोली "क्या देखे जा रहे थे। आज मैं पैण्टी पहिनना भूल गयी तो तुमको शर्म नहीं आती अन्दर ताकझॉक करते हो"।

शिशिर "जब देखने लायक चीज होगी तो ऑखें अटकेंगी हीं"

मैं "तो फिर चहिये है उसको"

शिशिर "उसके दावेदार तो और भी हैं। आप मेरी भाभी की सहेली हैं हमें आपकी इज्जत करनी है"।

मैं कुछ बौखला सी गयी "सुनीता और हम एक हैं। तुम और सुनीता में क्या है मुझे सुनीता ने सब

loveguruwb@yahoo.com

बता दिया है फिर हमको लेने में क्यों परहेज करते हो"।

शिशिर मेरा हाथ पकड़ कर अनुनय भरे स्वर में बोला "जब आप सब जानती ही हैं तो इन संबंधों को हम लोगों के बीच में ही रहने दीजिये न। सैक्स छोड़ दीजिये बाकी सब बातें मैं आपकी सुनीता भाभी की ही तरह मानूँगा। आप को कोई शिकायत नहीं होगी"।

उसकी तरफ देख कर कहने को कुछ और नहीं रह गया था।

मैं सोच भी नहीं सकती थी कि मेरी जैसी औरत देने को तैयार हो और कोई आदमी लेने से मना कर दे। सुनीता भी शायद नहीं सोच सकती थी क्योंकि जब मैने बताया तो अचानक खुशी से वह उछल पड़ी और मेरे गले लग गयी। सब कुछ बता देने के बाद

मैंने सुनीता से कहा "अच्छा भई मैं भाभी भक्त देवर को मान गयी लेकिन जाने के पहले उसका मजा तो चखा दो जिसने मेरी सहेली की यह हालत कर दी है"।

सुनीता पहले तो मुखर गयी। जब बहुत मिन्नतें कीं तो बोली "अच्छा देखेंगे"।

**13**

सुनीता और शिशिर

उसी दिन शाम को शिशिर और कुमुद सुनीता के यहॉ दिनर पर आये। शिशिर का बर्ताब मेरी तरफ बड़ा नरम था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

मैने सुनीता को उकसाया तो अकेला पा कर उसने शिशिर से बात की।

सुनीता "तुम बाकई भाभी के हकदार हो। तुमको अपने को सोंप कर मैने कोई भूल नहीं की। रजनी बापिस जा रही है। वह मेरी बढी अन्तरंग है। उसकी तमन्ना पूरी कर दो। समझो मेरी तरफ से यह तोहफा है"।

शिशिर आश्चर्य से "भाभी क्या बात करती हो मैं तुम्हारे और कुमुद के अलाबा किसी को नहीं छुऊॅगा फिर तुन ही तो उस दिन मुझ पर लांछन लगा रहीं थीं। मेरे से अलग हो जाना चाहतीं थीं"।

सुनीता " वह तो तुमको समझने के लिये कहा था। अब उसकी अच्छी तरह से मरम्मत कर दो कि शर्त लगाने की हेकड़ी भूल जाये"।

शिशिर "भाभी मैं तो तुम्हारे बगैर किसी को नहीं करूॅगा"।

सुनीता हॅस के "तो फिर कुमुद को क्यों लगाते हो"।

loveguruwb@yahoo.com

शिशिर "कहो तो करना छोड़ दूँ"।

सुनीता "नहीं नहीं तुम कहाँ बात ले जाते हो।मैं कह रही हूँ कि तुम रजनी को करो बस"।

शिशिर "तो आप को भी मौजूद रहना पड़ेगा"।

सुनीता " यह कैसे हो सकता है रजनी मेरे सामने कैसे करायेगी"।

शिशिर "क्यों नहीं करायेगी जब आपकी अन्तरंग है आपसे फरमायश कर सकती है"।

सुनीता "अच्छा देवर जी अब समझी तुम्हारी चालाकी दोनों को एक साथ लगाना चाहते हो"।

शिशिर "जाओ मैं नहीं करूँगा"।

सुनीता "अच्छा भई दोनों हाजिर हो जायेंगी"।

**14**

रजनी

मुझे यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि सुनीता ने शिशिर को तैयार कर लिया है ।सुनीता का साथ रहना भी मुझे भा रहा था।सुनीता ने जब प्रश्न उठाया कि लेकिन राकेश और रूप से बच कर मिलोगी कैसे तो मैने उसको चैलेन्ज जैसा लेते हुये कहा तुम इसकी फिक्र न करो मेरे ऊपर छोड़ दो।लेकिन यह बड़ी समस्या थी ।हम लोग छुट्टियों में थे और सब लोग साथ ही निकलते थे।उनसे अलग रह कर एक रात निकाल पाना टेड़ी खीर था।मैने एक प्लान बनाया।सुनीता को नहीं बताया नहीं तो वह मना कर देती।मैने सोचा कि रूप और राकेश को किसी और के संग लगा दें।ठीक भी था जब हम लोग मजे ले रहे थे तो उनको भी मजे ले लेने दें।सब के ऊपर नजर दौड़ायी तो मिसिज अग्रवाल ठीक लगीं।अच्छा भरा वदन था।खूब उभार लिये सीने थे।भारी सेक्सी चूतड़ थे।और उ नके जल्दी राजी हो जाने की उम्मीद भी थी।मैंने प्लान पर काम करना चालू कर दिया।

सबसे पहले मिसिज अग्रवाल का तैयार करना था।उनसे अकेले में मिली तो सैक्स की बातों के साथ उनकी सैक्सी बॉडी की बड़ी तारीफ

कर दी और कहा "बुरा न मानो तो एक बात कहूँ रूप तो तुम्हारे ऊपर मर मिटा है।जब भी मुझे करता है तुम्हारा नाम ले लेकर ही लगाता है"।

मिसिज अग्रवाल शर्माती हुई बोलीं "ओ मॉ बड़े बुरे हैं वो"।

मैने उनके हाथ को दबाते हुये कहा "बुरे नहीं जब तुम्हारे नाम का लगाते है तों तारे नजर आ जाते हैं।तुम लगबाके देख लो न"।

मिसिज अग्रवाल "तुम उन्हें परमीशन दे दोगी"।

मैं "जिस सुख को लेना चाहते हैं क्यों रोकूँ।तुम अपनी बताओ तुम्हें मंजूर है"।

loveguruwb@yahoo.com

उन्होंने ऑखों से हामी भर दी।

उसी रात मैने रूप से चुदायी करायी। उसकी मन की भरी बात कर तबियत खुश कर दी।

जब वह स्ट्रोक लगा रहा था मैने बात छेड़ी "रूप मिसिज अग्रवाल का दिल है तुम्हारे ऊपर तुमसे मजा लेना चाहतीं हैं"।

रूप ने पूछा "तुमको कैसे मालूम हुआ"।

मैंने कहा "खुद उन्होंने मुझ से इशारे में कह दिया। तुमसे कहने की हिम्मत नहीं हुई कि तुम मना न कर दो"।

यह बातें करते हुये रूप के स्ट्रोक की रफ्तार बढ गयी।

मैने बात जारी रखी "लेकिन रूप एक बात है उनका ज्यादा माल खाने का मन है। तुम्हारा और तुम्हारे दोस्त राकेश दोनों का साथ साथ खाना चाहतीं हैं"।

रूप का मन थोड़ा बुझ गया "पता नहीं राकेश का। वह उसकी बीवी पता नहीं"।

मैने चूत कस कर लंड पर जमाते हुये उसको उकसाया "तुम्हारा दोस्त है तैयार करो उसको। तर माल खाने को मिल रहा है"।

रूप ने जबाव में पूरा पेलते हुये कहा "करता हूँ उसको तैयार"

मैने चूत उसकी झॉटों से रगड़ते हुये कहा "डार्लिंग जल्दी करना वह मुझसे पूँछेगी"।

उसके बाद रूप के चोदने में बहुत उत्साह आ गया।

दूसरे दिन ही जबाव मिल गया। राकेश बखुशी तैयार हो गया। मुझे अब फिर से संगीता अग्रवाल से बात करनी थी। मैं पुराने जमाने की कुटनी का रोल कर रही थी। पत्नियॉ चुदबाना चाहतीं थीं पति चोदने को बेकरार थे लेकिन कितनी अजीब बात थी दोनों ही किसी और के लिये दीबाने हो रहे थे। किसी और को चूत देने के नशे में मैंने कैसी कैसी चालें चलीं थीं। मिसिज अग्रवाल से मिली तो अलग ले जाकर चिउँटी काटती हुई मैं फुसफुसा के बोली "तेरे मजे हैं रूप और राकेश दोनों ही लगाना चाहते हैं"। संगीता समझी नही बोली "अभी तो एक बार मिलना बहुत है"। मैने कान में कहा "एक साथ ही दोनों हॉ" और मैने उसका हाथ दबा दिया।

संगीता के चेहरे पर घबड़ाहट थी बोली "न बाबा न ऐसा कैसे हो सकता है"।

मैं झूट बोली "बड़ा मजा आता है मैं तो कई बार करा चुकी हूँ। सोचो दो लंडों का अलग अलग स्वाद मिलेगा"।

संगीता के चेहरे पर बासना नाच उठी "सच क्या मैं करा पाउँगी"।

मैने हाथ दबा कर उसके तसल्ली दे दी। वह भी लगबाने के लिये उत्तेजित हो गयी।

भाग्य से मिस्टर अग्रवाल को दो दिन बाद बाहर जाना था। उस दिन की रात मिसिज अग्रवाल के

loveguruwb@yahoo.com

यहॉ रूप और राकेश के लिये बुक हो गयी। मिसिज अग्रवाल खाना बड़ा जायकेदार बनातीं थीं और खुद भी जायकेदार थीं। रूप और राकेश की बड़ी दावत पक्की थी। हम लोगों के लिये मैदान साफ हो गया। मैने सुनीता को सुझाया कि वह घर में इन्तजाम न करे । किसी भी कारण से रूप और राकेश वापिस आ पहुॅचे तो हम लोग रंगे हाथों पकड़े जायेंगे। सुनीता ने शिशिर को खबर कर दी।

**15**

सुनीता रजनी और शिशिर

शिशिर ने एक आलीशान होटल में रूम रिजर्व कर दिया। सुनीता और रजनी आठ बजे रात को होटल पहुॅची शिशिर को साढे आठ बजे आना था। कमरे को देख कर दोनों दंग रह गयीं। शिशिर ने पॉच स्टार होटल का एक पूरा स्वीट बुक कर दिया था। खाने के लिये डाइनिंग टेबिल बैठने के लिये सोफा चमचमाता बाथरूम क्वीन साइज बैड और उसके सामने ढेर सारी खुली जगह। शिशिर साढे आठ के पहले ही पहुॅच गया। बैल दबाने पर दरवाजा खुला तो सुनीता और रजनी सामने खड़ी थीं एक दम सजी धजी। सुनीता ने दूध सी सफेद साड़ी पहिन रखी थी। उसका गोरा रंग उससे मिल गया था । गले में मोतियों का हार। कानों में हीरे के बड़े टाप्स। सुर्ख लिपस्टिक रॅचे होंठ और कमान सी ऑखें। रजनी ने धानी कुर्ता सफेद चूड़ीदार । हाथों में ठेर सारी हरी चूड़ियॉ। मैचिंग कीमती हार इयरिंग और सुघड़ मेकअप। शिशिर उनको तकता ही रह गया। सुनीता शर्मा के बोली अब आओगे भी या ऐसे ही खड़े रहोगे। शिशिर जैसे सोते से जाग गया हो।

उसने हाथ के बैग से एक सफेद मोगरे की माला निकाली और सुनीता से बोला "भाभी ये आपके लिये"। सुनीता उसकी ओर पीठ करके खड़ी हो गयीं। उसने माला उनके जूड़े में बॉध दी। मोगरा महक उठा। पलट कर सुनीता ने उसके गले में बॉहें डाल दी। शिशिर ने उन्हें खीच कर अपने से चिपका लिया। दोनों ऐसे ही जुड़े थोड़ी देर खड़े रहे। सुनीता ने एक चुम्बन उसके होठों पर लेकर अपने को अलग किया।

शिशिर रजनी की तरफ बढा और बैग से सुर्ख गुलाब का बुके उनकी ओर करके बोला "रजनी जी ये आपके लिये"

रजनी बोली "रजनी नहीं भाभी"

शिशिर ने अपने को सुधारते हुये कहा "रजनी भाभी यह आपके लिये"।

रजनी ने बढ के दोनों बॉहें उसके गले में डाल दी और अपने होंठ कसके उसके होंठों पर गड़ा दिये। शिशिर उनको चूमता रहा।

इस बीच सुनीता डाइनिग टेबिल पर जार में रखी सुगंधित मोमबत्ती जला दी थी और उसकी भीनी भीनी खुशबू कमरें में भरने लगी थी। सॉफ्ट म्यूजिक लगा दिया था। सुनीता ने लाइट ऑफ कर दी। शिशिर ने सुनीता की ओर देखा। मोमबत्ती की मंद रोशनी में वह परी सी लग रही थी। रजनी की कमर में हाथ डाले हुये शिशिर सुनीता की ओर बढा और उसको अपने से चिपका लिया। रजनी उ

loveguruwb@yahoo.com

सके बॉयें कंधे से चिपकीं थीं सुनीता दॉयें से। इसी हालत में वह लोग थिरकते रहे। शिशिर कभी सुनीता को चूमता था कभी रजनी को। शिशिर का लंड गरमाने लगा था। रजनी उस पर हाथ फेरने लगी थी। उसने झुक कर सुनीता के दॉयें उभार को ब्लाउज के ऊपर से ही मुॅह में ले लिया। सुनीता सी सी कर उठी।

सुनीता ने फुसफुसा के कहा "देवर जी पहले रजनी को सुख दीजिये मैं तो आपके पास ही हूॅ आज की रात उसकी है"।

शिशिर ने रजनी को प्यार से चूम लिया "रजनी भाभी भी तो अपनी हैं" फिर सुनीता को और भींजते हुये बोला "भाभी शुरूआत तो मैं आप से ही करूॅगा लेकिन तुम दोनों इतनी अच्छी लग रही हो कि मैं कुछ भी नहीं उतारना चाहता"।

लेकिन रजनी उसका पैण्ट उतार चुकी थी। अण्डरवियर खींच कर रजनी ने उसके लंड को मुट्ठी में बॉधा तो जैसे लोहे की गरम रॉड पर हाथ रख दिया हो। शिशिर का बड़ा मोटा और लंबा लंड सॉप की तरह ऊपर मुॅह बाये खड़ा था। पत्थर की तरह सख्त।

उसको देखते ही रजनी के मुॅह से निकल गया "ओ माई गुडनैस अब समझी सुनीता इतनी दिवानी क्यों हो रही थी"। रजनी शिशिर की बॉहों से खिसक कर नीचे घुटनों के बल बैठ गयी। मुट्ठी में बॉध कर उसका लंड सीधा अपने सामने कर लिया और मुॅह खोल कर अपने नरम होंठ उसके ऊपर रख दिये। होंठ लगते ही शिशिर की वासना एकदम जाग उठी। हाथ बढा कर शिशिर ने रजनी को उठा लिया और सुनीता की कमर में हाथ डाल कर उन्हें खींचता हुआ बैड तक ले गया। रजनी को बैड के पॉयताने कारपैट पर बैठा दिया और सुनीता को बैड पर चित गिरा दिया। शिशिर ने सुनीता की साड़ी ऊपर तक उलट दी। बाहर के ही नहीं अन्दर के कपड़े उसने कीमती पहिन रखे थे। लेस लगी डिजाइनर पैण्टी पर चूत के पानी से एक बड़ा धब्बा बन गया था। शिशिर ने पैण्टी अलग की। सामने दो चिकनी सपाट जॉघें थीं सन्तरे की रसभरी फॉक की तरह सूजी सूजी चूत की पंखुड़ियॉ थीं जिनके भीतर से गुलाबीपन झॉक रहा था अर्धगोल सुडौल नितम्ब थे जिनके बीच में गहरी दरार थी।

उसके मुॅह से निकल गया "भाभी तुम बाकई बहुत खुबसूरत हो"।

दोनों हाथों से उसने सुनीता को खींच लिया और उसकी जॉघें अपने कंधों पर धर लीं। सुनीता का धड़ पलंग पर था नितम्ब पलंग से ऊपर उठे हुये थे और मुॅह खोले चूत शिशिर के मुॅह से सटी हुई। सुनीता की चूत से मदमस्त अरोमा निकल रहा था। शिशिर ने अपने होंठ सुनीता की पंखुड़ियों से सटा दिये और चूतड़ आगे कर अपना लंड पलंग से टिकी बैठी रजनी के होंठों से लगा दिया।

रजनी ने सिर ऊॅचा कर उसका लंड अपने होठों में ले लिया।

जैसे ही शिशिर ने चूत के अन्दर के उभार को होंठों में दबोचा सुनीता के मुॅह से एक शीत्कार निकल गई और वह तनकर के धनुष की तरह हो गयी। वह चूत की उठान को होंठों से इस तरह चूसने लगा जैसे संतरे की फॉक चूस रहा हो। नीचे बैठी रजनी शिशिर के लंड को जड़ से दायें हाथ की मुट्ठी में बॉथे पाप्सिकिल की तरह चटखारे लेकर चूस रही थी। शिशिर दोहरे मजे ले रहा था। रजनी ने मुट्ठी को लंड के सिरे तक फिसला कर उसके ऊपर की खाल को हटा दिया। लंड का सुपाड़ा निकल

आया।जैसे पाप्सिकिल खा रही हो उसने सुपाड़ा अपने मुँह में लेकर हल्के से दाँत लगा दिये।शिशिर उत्तेजना से कराह उठा और उसने चूत की उठान पर हल्के से दाँत लगा दिये। सुनीता के मुँह से चीख निकल गयी़ बोली “ओ देवरजी तुम तो काटते हो”।

शिशिर हिल पर जीभ फेरने लगा।सुनीता की सिहरन बढ गयी।उसने शिशिर के सिर पर हाथ रख कर और कस के उसका मुँह चूत पर दबा लिया।शिशिर ने साथ ही चूतड़ आगे कर और जोर से लंड मुँह में पेला। रजनी ने होंठों की ग्रिप और बढा दी।जब रजनी जोर बढा देती थी तो शिशिर सुनीता की चूत पर कसर निकालता था और जब सुनीता रगड़ बढा देती थी तो शिशिर रजनी पर कसर मिटाता था। शिशिर सुनीता और रजनी के बीच माध्यम बन हुआ था।

सुनीता जोरों से ‘उई ई ई ई ि ि ि ि ि ाााााााााा ‘ करे जा रही थी।

रजनी के मुँह से न्किल रहा था ‘उ हूँहूँहूँ हूँ ऊँ ऊँ ऊँ ॒ ॒ ॒॒॒॒ ‘ जैसे बढी स्वदिष्ट चीज चाट रही हो।

शिशिर की जीभ चूत की गहराइयों तक घुस जाती थी और सुनीता तड़प तड़प जाती थी।

शिशिर दोनों हाथों से सुनीता की दोनों चूचियों को मसल रहा था।उसके दोनों निपिल ब्लाउज के ऊ पर ही एक एक इंच उभर आये थे।

रजनी उँगली और अँगूठे की रिंग बना के शिशिर के लंड को उसमें ले रही थी साथ ही मुँह से चूसती जाती थी।

काफी देर तक वह मजे लेते रहे।सुनीता की गुलाबी बटरफ्लाई तन कर सख्त हो गये थी। शिशिर ने उसके ऊपर अँगूठा रखा।

सुनीता एक दम काँप गयी “ ओ ओ माँ माँ ाँ ाँ ाँ ाँ आँ ाँ ाँ ाँ ाँ आँ ााााााााााााााााा ाााााा ाााााा ाा में तो ग ग ई ई ई ई ई ई ई ि ि ि ि ि ि ि ि “

उसने कसके चूत शिशिर के मुँह से चिपका दी औ़ जोरों से दोनों हाथों से उसका सिर टाँगों में दबा लिया।

शिशिर बड़ा उत्तेजित हो उठा। उसने लंड पेलने की स्पीड बढायी और उसके लंड ने उगलना चालू कर दिया।

रजनी ने मुँह से लंड निकाल लिया। लंड से गाढा रस निकलता ही जा रहा था। रजनी ने सुनीता की पैण्टी उठा ली और ढेर सारा लोड उस पर ले लिया।

रजनी उठी और खड़े हो कर शिशिर से चिपक गयी। शिशिर के वीर्य से भरे अपने होंठ़ सुनीता के रस से गीले शिशिर के होठों से सटा दिये।

रजनी ने उठ कर सुनीता की ओर देखा। वह निढाल पड़ी हुई थी। साड़ी उलटी हुई थी। बड़ी ही चिकनी और सुडौल टाँगों के बीच चूत की फाँकें तराशी हुयीं डबलरोटी की तरह फूली हुई थी। उ नके ऊपर बड़े सलीके से कतरे हुये सुनहरे बालों का तिकोन सा बना था। दोनों फाँकें फैल गयीं थीं। अन्दर का गुलाबीपन दिखायी दे रहा था जिसके अंदर से नमी झाँक रही थी । बुरी तरह चुसने

से चूत लाल हो गयी थी। पेट और टॉगों पर जरा स भी ज्यदा मॉस नहीं था। सब कुछ एकदम अनुपात में। ब्लाउज बुरी तरह से मॅसला हुआ था जिसमें से सुडौल गोलाइयॉ उभरी हुयीं थीं। सफेद साड़ी में चूत खोले कोई अप्सरा पड़ी थी। रजनी पहली बार अपनी अंतरंग सहेली के अन्दर के भागों को देख रही थी। इस बीच शिशिर बाथरूम चला गया था। रजनी की चूत में आग लगी हुई थी।रजनी ने एक झटके से अपनी सलबार का नाड़ा खोल लिया और चूत के रिसने गीली हो गयी पैण्टी को खींच कर निकाल फेंका।अपना कुर्ता भी निकाल फेंका और बिल्ली की तरह चलती हुई सुनीता के ऊपर आ गयी।वह सुनीता के ब्लाउज के बटन खोलने लगी। रजनी पहली बार ऐसा कर रही थी। सुनीता भौंचक रह गयी।

बोली "रज नीई ये क्या करती हो"।

रजनी तब तक उसका ब्लाउज और ब्रेजियर अलग कर चुकी थी। बड़े बड़े गोले स्प्रिंग से उछल कर बाहर आ गये थे। रजनी ने देखा तो बोल पड़ी

"सुनीता तू बाकई बहुत खुबसूरत है"।

रजनी ने सुनीता का बायॉ उभार निपिल सहित मुॅह में भर लिया और अपनी चूत सुनीता की चूत के ऊपर बैठा दी।जब रजनी की चूत की पंखड़ियों ने सुनीता की चूत के अन्दर रगड़ा तो सुनीता को बहुत अच्छा लगा।उसने रजनी की पतली कमर अपनी दोंनों टॉगों के बीच भर ली और अपनी टॉगें उसकी कमर पर कस कर उसकी चूत को और कस कर अपनी चूत में घुसा लिया।

रजनी ने अपनी दॉयी चूची उसके मुॅह में दे दी ।

शिशिर जब बाथरूम से आया तो उसने देखा कि सुनीता चित लेटी है। रजनी उसके ऊपर लेटी है। रजनी सुनीता की एक चूॅची चूस रही है और सुनीता रजनी की चूची पर पिली पड़ी है। सुनीता की नारंगी की तरह रस से भरी हुई सुनहरे तराशे बालों बाली चूत रजनी की लम्बी फॉक बाली रसीली सपाट चूत में लॉक है। सुनीता की चूत का एक होंठ रजनी की चूत में घुसा है और रजनी की चूत का एक होंठ सुनीता की चूत के भीतर। दोनों एक दूसरे के चूत के अन्दर के दाने को रगड़ रहीं हैं। चूत को ज्यादा से ज्यादा खुला रखने के लिये सुनीता ने अपनी टॉगें रजनी की कमर पर कस रखी हैं और रजनी ने टॉगें फैला रखी हैं। दोनों कस कस के आवाजें निकाल रहीं हैं।

यह देख कर शिशिर का लंड तन कर उत्तेजना से हिलने लगा। वह आगे बढा और पलंग के पैताने जा कर उसने उन दोनों को बैसी ही गुॅथी हालत में पलंग के किनारे तक खींच लिया ।पायताने खड़े खड़े ही उसने अपना लंड हाथ से पकड़ा सुनीता की चूत के मुॅह पर रखा और एक झटके में ही पूरा अन्दर कर दिया।

सुनीता के मुॅह से निकला " उईई मॉाा"।

उसने दो तीन बार उसको अन्दर बाहर पेला। फिर अपना लंड बाहर खींच लिया। फिर से मुट्ठी में बॉधा और अबकी बार रजनी के सुराख से मिलाया और जोर लगा के घुसाता ही गया।

रजनी कराह उठी "ओ मा ई गॉ ड "।

दो तीन बार उसने उसकी चूत में ही अन्दर बाहर किया फिर खींच लिया। फिर उसने सुनीता की बुर

पर लगाया बोला “लो भाभी अब तुम लो” और सारा का सारा अन्दर कर दिया।

सुनीता बनाबटी शिकायत से “देवर जी तुम तो अन्दर तक हिला देते हो”।

बाहर खींच कर शिशिर ने रजनी की बुर में एक झ्टके मेंपूरा भीतर “लो रजनी भाभी तुम लो”।

रजनी “हॉ लगाओ तुम्हारे लंड में जोर है तो मेरी चूत भी कम नहीं”।

शिशिर एक बार सुनीता को चोदता था और एक बार रजनी को। दोनों के अन्दर उसका लंड एक से निकलता दूसरी की में घुस जाता।

उसको दुहरा स्वाद मिल रहा था। एक बार सुनीता की मॉसल स्पंजी लंड को जकड़ने बाली बुर का दूसरी बार पतली लंबी गरम सुरंग का जिसमें लंड गहरायी तक घुस जाता था।जब वह रजनी पर चोट करता तो रजनी झेलते हुये अपनी चूत सुनीता की चूत पर रगड़ देती। झब वह सुनीता पर जोर लगाता तो सुनीता तॉगों की जकड़ और बढा देती कि उसकी चूत रजनी की बुर पर रगड़ मार देती। शिशिर की रफ्तार बहुत बढ गयी थी। धकाधर धकाधक वह लगाये जा रहा था।सुनीता में रजनी में फिर सुनीता में।सुनीता रजनी एक दूसरे की चूचियों को कस के जकड़े हुये थीं।उनका सिसकना बढ गया था।

जैसे ही चोट लगती सुनीता बुदबुदाती “ओ ओ शिशिर मैं क्या करूँरूँऊरूऊ हू हू ऊ हू हू ऊ हू “।

सुनीता जब ज्यादा आनन्द में आ जाती थी तो शिशिर का नाम ले कर पुकारने लगती थी।

रजनी का चुनौती बाला रूख अब भी बना हुआ था हालॉकि उसमें रहम जैसा भाव आ गया था

उसके अन्दर धक्क से जाता तो रजनी कराह उठती “ ओ मेरे राााााााम्म्म्म हॉ हॉ ॅ ॅ ॅ हॉ काट डालो इसको आज इसे छोड़ना नहीं”।

शिशिर ने सुनीता की जॉघों को दोनों हाथों से थाम रखा था जो रजनी की कमर पर कसी हुई थीं खड़े खड़े वह एक के बाद एक दोनों को पेले जा रहा था जैसे पिस्टन शंट कर रहा हो।

सुनीता में घुसता सुनीता तड़पती “ओओ ओ ओ ओ ो ो ो आ ा आााााा आो आो मेरी मम्मीर्मीीीीी ओ माईई ़़ गॉ गॉ ड

उईईई मॉओऑाााााााााााा मैं म मरीईईईई “

रजनी झेलती तो दॉतों के ऊपर दॉत जकड़े हुये अन्दर ळांबी सॉस खींचती “ऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊ”

जब चोट पड़ चुकती तो जोर से सॉस बाहर करती “फुअफुअफुअफुअफय्अफुअ”।

सुनीता की बुर बुरी तरह से रिस रही थी। जॉघों तक पानी फैल गया था। रजनी की बुर भी पूरी गीली हो रही थी। दोनों की चूत गुत्थमगुत्था थी और एक दूसरे के पानी से लथपथ हो रही थी। शिशिर का लंड उनकी चूत से फच्च्च फच्च्च की आवाज निकाल रहा था।

सुनीता और रजनी की कराह बढती जा रही थी।

“ओओ ओ ओ ओ ो ो ो आ ा आााााा आो आो मेरी मम्मीर्मीीीीी ओ माईई ़़ गॉ गॉ ड

loveguruwb@yahoo.com

उईईई मॅाऑॅाााााााााााा मैं म मरीईईईई “

““ऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊ”

“फुअफुअफुअफुअफय्अफुअ”

शिशिर ने और स्पीड बढायी तो रजनी ने सुनीता की चूची को छोड़ अपने होंठ उसके होंठों पर गढा दिये।शिशिर ने हाथ बढा कर सुनीता की दोनों चूचियॅा हथेलियों में थाम लीं और शंटिंग चालू रखी। दोनों होंठ चूसती जातीं थीं और ‘ऊॅऊॅ’ की आवाज करती जाती थीं। जैसे ही शिशिर ने चूचियों की घुंडियों को उॅगलियों में मसला सुनीता चिल्ला उठी

“ओ शिशिर मैं तो ग ई ई ई......मत निकालो ओ बाहररररररर”।

इसके साथ ही अपनी कमर उठा कर उसने रजनी की चूत से इतने कस के सटा ली कि रजनी हिल न सकी। उसकी रगड़ से रजनी का पानी भी छूट गया “अआााााआा मैंऐऐं क्याााा करूरूरूरूरूरूरूरूरूरूरूरूरूॅ मॅाााााााााााा मेरीीीीीीीीीीीीीीीीीीीी मैं झड़ीीीीीीीईई......।”

शिशिर ने जल्दी से पूछा “रजनी भाभी आपने बर्थ कंट्रोल पिल ली है”।

रजनी के हॅा कहते ही शिशिर ने रजनी की बुर में अपना पूरा लंड अंदर किये हुये ही सारा लोड उगलना चालू कर दिया।

करीब करीब एक साथ तीनों लोग सिहरते रहे। जब शिशिर ने लंड बाहर किया तो रजनी की मसली चूत के अन्दर से गाढा गाढा सफेद लिक्विड बाहर निकल कर सुनीता की चूत पर गिर रहा था।

रजनी ने उठ कर अपनी चूत को पौंछा। सुनीता ने हाथ से खींच कर शिशिर को अपनी बगल में लिटा लिया। शिशिर ने हाथ बढा के रजनी को अपनी दूसरी तरफ लिटा लिया। दोनों ने शिशिर के एक एक कंधे पर सिर रख लिया।

रजनी बोली “थैंक यू शिशिर मैं पूरी तरह संन्तुष्ट हो गयी हॅू खासतौर पर तुमने मेरी सहेली से मेरी जान पहचान करवा दी”।

सुनीता लजाती हुयी बोली “धत्त ऐसा भी कोई करता है”।

शिशिर बोला “रजनी भाभी अभी कहॅा अभी आपसे अकेले की मुलाकात तो करनी है।

रजनी “न बाबा और मैं न ले सकॅूगी”।

सुनीता “शिशिर इसको मत छोड़ना। इतनी इठलाती थी हेकड़ी तो बन्द हो इसकी”।

शिशिर ने सुनीता को भींच कर चूम लिया फिर रजनी को भींच कर उसको चूम लिया।

loveguruwb@yahoo.com

जब सुनीता और रजनी शिशिर से मुलाकात का बेसब्री से इन्तजार कर रहीं थीं ठीक उसी समय राकेश और रूपेश मिसिज अग्रवाल के घर पर दस्तक दे रहे थे। मिसिज अग्रवाल ने दरवाजा खोला। एकदम सजी धजी पूरा श्रंगार किये। कमनीय तो थी हीं और मादक हो उठी थीं। पूरे उठे हुये जोबन उभरे गोल गोल चूतड़ दमकता रंग ऑखों में सुरूर। मोटी नहीं थी पर शरीर अच्छा भरा हुआ। उन्होने राकेश का हाथ पकड़ते हुये कहा "आइये देवर जी" फिर ब की ओर देखते हुये "आ इये रूपेश जी"।कोई हिचकिचाहट नहीं थी न शर्मा रही थीं। अन्दर आ कर राकेश ने कीमती परफ्यूम प्रजेण्ट की तो वह उससे सट के खड़ी हो गयीं बोली "लीजिये लगा दीजिये"। राकेश उनके उभार की नजदीकी महसूस करने लगा था। उसके शरीर में झनझनहट सी लगने लगी थी।

वह बोलीं "बैठिये"।

लिविग रूम में शानदार सोफे पड़े हुये थे। खुशहाली और सुरूचि चारों ओर नजर आ रही थी। राकेश और रूपेश बड़े से सोफे पर बैठ गये।

मिसिज अग्रवाल ने पूछा " आप लोग कुछ हार्ड डिंक लेना चाहेंगे मैं तो लेती नही"।

राकेश "अगर आप साकी बनेंगी तो जरूर लेंगे"।

मिसिज अग्रवाल " आप बनाइये तो सही मैं सब कुछ बनूगी। आज की रात आपके नाम है अगर कुछ कमी रह गयी तो सुनीता और रजनी शिकायत करेंगी"।

राकेश और रूपेश दौनों ड्रिन्क बना लाये और मिसिज अग्रवाल के लिये कोक। मिसिज अग्रवाल बड़ी बेतक्लुफी से उनके सामने लवसीट पर बैठ गयीं। दौनों टॉगें चौड़ाई हुई थीं। अगर साड़ी से न ढकी होती तो सामने चूत का पूरा मुँह खुला दिखता। उन दौनों को नमकीन देने को ठीक उनके मुँह के सामने इस तरह झुकती थी कि उनकी छातियॉ निप्पिल तक दिखायी देती थीं। रूपेश से न रहा गया तो उनको पकड़ा तो उसके ऊपर इस तरह गिरीं कि हाथ उसके लण्ड पर रख दिया फिर उ ठती हुई बोलीं "तसल्ली रखो लाला जी"।

अब की बार सामने और बेतक्लुफी से बैठीं। टॉगें चौड़ाये दोनों पैर सोफे पर रख लिये। टॉगों के ऊपर की साड़ी ऊपर हो गयी थी नीचे की नीचे गिर गयी थी सामने चूत को केबल सिल्किन अण्डरवीयर के हुये थी जिसके ऊपर एक धब्बा उभर आया था। दो एकदम फक्क गोरी सुडौल रानें उनके बीच फॅसी हुई पतली काली पट्टी वह दोनों उत्तेजित होने लगे थे। लण्ड उठने लगे थे जिनको वह बढे ध्यान से देख रहीं थीं।

राकेश कहने लगा "भाभी तुममें गजब है ऐसी चीज को अग्रवाल कैसे छोड़ कर चले जाते हैं"

मिसिज अग्रवाल "जाने के पहले अपनी पूरी कसर निकाल लेते हैं बाकी आने पर पूरी कर लेते हैं। हाथ लगाने से दुख रही है। पहले से तुम लोगों से वायदा न होता तो आज मैं आराम कर रही होती"।

रूपेश ने कहा "भाभी ऐसा भी क्या तड़पाना नाहीं छुपाते हो नाही मुँह दिखाते हो"।

मिसिज अग्रवाल ने ऑख नचाई "मुँह दिखाई की रश्म होती है"।

loveguruwb@yahoo.com

राकेश उठते हुये "लो मैं रश्म पूरी किये देता हूँ"।

मिसिज अग्रवाल जल्दी से उठते हुये "ना ना पहले दूल्हे मियॉ को तो देखने दो"। वह रूपेश और राकेश के बीच में सट के बैठ जातीं हैं। दोनों तरफ हथेलियों से दोनों लण्ड थाम लेती हैं। राकेश कमर में हाथ डाल के अपनी तरफ खी च लेता है। वह सामने से छातियॉ पूरी गड़ा के कस के चिपक जाती हैं उसके होंठों को अपने होठों से दबा लेती हैं और नीचे हाथ डाल के उसका लण्ड बाहर निकाल के फुसफुसाती हैं "ये तो बहुत ज्यादा दबंग है"।

राकेश पीठ पर ब्लाउज के बटन और ब्रेजियर के हुक खोल देता है। रूपेश उठ कर के उनकी साड़ी खी च लेता है और आगे हाथ डाल के नाड़ा खोल के पेटीकोट खी च लेता है। वह उतारने के लिये पैण्टी पकड़ता है कि मिसिज अग्रवाल उठ कर के खड़ी हो जाती हैं "इसको अबी रहने दो"। उनका पूरा वदन दमकता है। उम्र के बाबजूद उनकी भरी छातियॉ गोल और सख्ती से खड़ी हुई हैं। काली घुण्ण्डियॉ तन करके आथा इंच ऊची हो गयीं।वदन पर कोई थुलथुल मॉस नहीं।

बोलीं "पहले आप लोगों की बारी है"। इसके साथ ही वह राकेश का पैण्ट उतारने को बड़तीं हैं लेकिन इसकी जख्रत नही पड़ती वह दोनों अपने अपने कपड़े उताार फेंकते हैं। दोनों का तन्नाया लण्ड खड़ा होता है।

मिसिज अग्रवाल के मुॅह से निकल जाता है "हे मॉ आप दोनों तो एक दूसरे से होड़ ले रहे हैं मैं कैसे लूगी ये"। उत्तेजना में राकेश उनको बॉहों मे बॉध लेता है। वह राकेश को लिये हुये सोफे पर गिर जाती हैं फिर फिसल कर नीचे कार्पेट पर घुटने के बल बैठ जाती हैं। राकेश के लण्ड की सुपाड़ी खोल कर अपने होठों में दबा कर उसको चूसने लगती हैं।राकेश का शरीर एकदम तन जाता है। रूपेश पीछे से उनकी चूचियॉ जकड़ लेता है तो दूसरा हाथ बढा कर वह उसका लण्ड पकड़ लेती हैं और लण्ड पकड़े हुये राकेश के बगल में बैठा लेती हैं। राकेश को अब पूरा का पूरा निगलती जाती हैं और रूपेश के लण्ड मुट्ठी मारती जाती हैं। मिसिज अग्रवाल ने दोनों गोलाइयॉ राकेश के पैरों पर दबा ली हैं। राकेश हाथ डाल कर उनकी चूचियों को मुॅह हथेलियों में भींच लेता है और अपने होंठ उनकी चिकनी सुडौल पीठ पर चिपका देता है। मिसिज अग्रवाल की घुटी घुटी चीख निकल जाती है वह बुदबुदाती जाती हैं जिसमें प्लेजर मिला हुआ है। ब पीछे से पैण्टी के अन्दर हाथ ले जाके बीच की उॅगली उनकी चूत के अन्दर कर देता है जो तर हो रही है। मिसिज अग्रवाल एकदम उछल जाती हैं। राकेश के लण्ड पर दॉत गड़ा देती हैं। रूपेश का लण्ड बहुत कस के मुट्ठी में जकड़ लती है। वह दोनों चीख उठते हैं। मिसिज अग्रवाल की रफ्तार बहुत तेज हो जाती है साथ ही वह अपनी चूत भी रूपेश की उगली पर ऊपर नीचे करती जाती है। क्योंकि रूपेश उगली ज्यादा अन्दर नही। कर सकता है। तीनों लोग जोर जोर से आवाजें निकाल रहे है।

सबसे पहले मिसिज अग्रवाल चिल्लाती हैं "ओ मॉऑाा मै तो गइइई"।वह बडी जोर से राकेश के लण्ड को चूसती हैं। रूपेश के लण्ड पर कस के मुट्ठी मारती हैं।वह बड़ी देर झड़ती रहती हैं साथ ही जोरों से शीईई... की आवाज करती रहती हैं। राकेश अपना गाढा रस उनके मुॅह में उगल देता है। रूपेश की धार हवा फव्वारे की तरह छूट जाती है। मिसिज अग्रवाल अपना मुॅह हटा लेती है। रिस रिस करके सफेदी नीचे गिरती जाती है।

मिसिज अग्रवाल सोफे पर दोनों के बीच बैठ कर उनके सिर अपनी छातियो से चिपका लिया। तीनों देर तक निढाल से पड़े रहे। फिर दोनों को चूम कर उन्होने बैडरूम में चलने को कहा। बैडरूम में शानदार किंग साइज का बैड पड़ा था और एक दीवाल पर सोफे लगे हुये थे। मिसिज अग्रवाल बाथरूम से आके बोलीं "अब मैं अपनी दिखाने को तैयार हूॅ लेकिन दूॅगी तव जब आप अपनी मस्त चुदायी की कहानी सुनायेंगे"।

राकेश और रूपेश वैसे ही नंग धडंग सोफे पर बैठ गये थे। उनके सामने पलंग पर बैठ कर मिसिज अग्रवाल ने एक झटके से अपनी कच्छी खींच कर उताार दी।वह उनके जूस से तर हो रही थी। फिर उन्होंने उॅगली में घुमा के उन लोगों की ओर फेंका। वह रूपेश के मुॅह पर पड़ी। ब ने बड़े प्यार से मस्ती से उसे चूमा और लम्बी सॉसों से सूघा। मिसिज अग्रवाल ने टॉगें चौड़ी कर दीं। माई गॉड़ डबलरोटी की तरह फूली उनकी फुद्दी थी एकदम सपाट। पैर फैलाने से संतरे की फॉक से ओंठ खुल गये थे।बीच में तितली सी क्लीटोरिस उठी हुई थी और उसके नीचे चूत का छेद खुला हुआ था एकदम पिंक गहराई तक गीला और चमकता हुआ। एकदम पकी हुयी मैच्योर। रूपेश के मुॅह से निकल गया " ओ माई गॉड ऐसी चूत तो मैने आज तक नहीं देखी"। दोनों के लण्ड जो उठे हुये थे तन्ना कर सीधे ऊपर हो गये। उठ कर वे पलंग की तरफ बढे।

मिसिज अग्रवाल ने टोका "पहले सुनीता रजनी की चुदायी की बातें"।

अभी बताते हैं उन्होंने कहा पर राकेश ने उनको पलंग पर खींच लिया और टॉगें दोनो ओर कर अपना मुॅह उनकी गदूली सी चूत के ऊपर रख दिया। होठों के बीच घुण्डी ले कर चूसने लगा। मिसिज अग्रवाल के मुॅह से किल्कारी निकल गयी। रूपेश ने सिरहाने पहुॅच कर उनकी एक चूची मुॅह मे लेली और दूसरी हथेली में कस के दबा ली। उसका बड़ा सा लण्ड मिसिज अग्रवाल के मुॅह के सामने लटक रहा था जो उन्होंने आगे बढ कर मुॅह में ले लिया।राकेश उनकी चूत को बहुत बुरी तरह से चूस रहा था। उनकी रानें को दोनो हाथों के जोर से पूरा फैला लिया था और अपना मुॅह जितना घुसा सकता था घुसा लिया था।बीच बीच में जीभ उनके मैं करता था। मिसिज अग्रवाल अपनी चूत उठा उठा दे रहीं थी। रूपेश का लण्ड काफी बड़ा था जो वह पूरा नहीं ले पा रहीं थीं। लेकिन जब राकेश चूत को चाटता था तो वह सिर ऊॅचा कर रूपेश का लण्ड पूरा गपक लेती थीं। गाय की बछिया की तरह चटकारे लेकर चूस रहीं थीं। चूतड़ बेचैनी से रगड़ रहीं थीं। जब राकेश ने फिर से जीभ चलायी तो उन्होने रूपेश के लण्ड से मुॅह खींच लिया

"हू हू ऊऊऊऊ ओ मॉ ऑाा तुम न तौओो आग लगााआा दी है। ळण्ड डाल दो अपनाा"

राकेश "पर वो चुदायी की कहानी तो॰॰॰"

"कहानी फिर पहले मेरीई चुदाीयीीीीी" और उन्होंने खुद उसका लण्ड पकड़ कर चूत पर लगाया और चूतड़ उठा कर के घप्प से अन्दर ले लिया।

बोलीं "लगाओ कस कस के"।

राकेश ने तीन चार बार उनको कसकस के पेला। हर झटके पर वह और जोर से लगाने को उ कसाती थीं।

loveguruwb@yahoo.com

राकेश ने लण्ड बाहर निकाल लिया और उनसे कहा " आप घुटनों के बल उकड़ूँ हो जाइय मैं पीछे से लगाउँगा आगे से आप रूपेश का लण्ड ले लीजिये"।

मिसिज अग्रवाल पलट के घुटनों और बाँहों के बल उकड़ूँ हो गयीं। पीछे से राकेश ने लण्ड लगाया। जैसे ही पेला वह सड़ाक से उनकी चूत में घुस गया। उसने हाथ डाल के उनकी दोनों चूचियाँ पकड़ लीं। रूपेश उनके ठीक मुँह के सामने लण्ड तन्नाके खड़ा था। उन्होंने एक मुट्ठी में लण्ड पकड़ के मुँह में ले लिया। राकेश निप्पिल को उँगलियों में रगड़ रगड़ के लण्ड अन्दर बाहर शण्ट कर रहा था। हर चोट पर मिसिज अग्रवाल का धड़ आगे हो जाता था और रूपेश का ळण्ड उ नके ताालू तक घुस जाता था। जितनी चूत पर चोट पड़ती थी उतनी ही तेजी से वह रूपेश के लण्ड को मुँह में ले रहीं थीं। रूपेश अपने दोनों हाथों से उनके दोनों गोल गोल चूतड़ मजबूती से जकड़े था अऔर अपना लण्ड ऐसे पेल रहा था जैसे चूत में धकापेल कर रहा हो। उसकी जकड़ से मिसिज अग्रवाल के पीछे का क्रेक फैल गया था। आगे पीछे स्पीड से सटासट हो रहा था। मिसिज अग्रवाल पूरी तरह आनन्द में थीं।

"ओ मेरी माँ दो दो लण्ड मेरे अन्दर हो रहे हैं। इतना मजा ता मैने नहीक्त लिया"

राकेश और रूपेश के ऊपर वासना का भूत सवार था। राकेश पूरा लण्ड खच्च से घुसेड़ता आवाज निकालता "ले पूरा ले ले"

रूपेश आगे बढ के मुँह में घुसेड़ देता "ले मेरा ले अब"।

मिसिज अग्रवाल अलग से चिल्ला रहीं थीं " हाँ हाँ लगाओ छोड़ना नहीं आज इसको फाड़ के रख दो पूरा"।

राकेश ने स्पीड बढा दी। यकायक चिल्लाया " मैं झड़ा। लो लो लो और लो"

मिसिज अग्रवाल " नो नो अभी मत झड़ना। इस को फाड़ के रख दा। मेरे को बीच में मत छोड़ो"।

लेकिन राकेश ने सफेदी उगलना चालू कर दी थी। मिसिज अग्रवाल ने जल्दी से अपनी चूत बाहर खींच ली।

राकेश को खिसका कर ब तेजी से उस ओर आया। कमर में हाथ डाल के उसने मिसिज अग्रवाल को चित्त कर दिया और अपना लण्ड धपाक से पेल दिया। राकेश ने जबर्दस्त चुदाई की थी। वह बुरी तरह लथपथ था। बाथरूम में घुस गया।

मिसिज अग्रवाल ने रूपेश को खीच कर कसके भींच लिया।दोनों बाहें उसकी पीठ पर बाँध लीं और टाँगें उसकी कमर के इर्द गिर्द जकड़ लीं।

बोलीं " ओ मेरे लाला अब मेरी इसकी पूरी मरम्मत कर दो"।

रूपेश ने बाहर कर अचानक धक्के से अन्दर करते हुये कहा "लो भौजी तुम भी क्या याद रखोगी किस लौड़े से पाला पड़ा था"।

बिसात बिछी हुई थी। खेल चालू था। दोनों एक दूसरे से चिपके हुये चुदाई किये जा रहे थे और

बतिया रहे थे।

मिसिज अग्रवाल " हॉ लौड़ा तो तुम्हारा जबर्दस्त है। अन्दर तक धुनाई कर देता है। आज तो मजा आ गया पहले वनिला अब चाकलेट आइसक्रीम"।

रूपेश "और अग्रवाल साहब क्या हैं"।

मिसिज अग्रवाल "इटालियन बार कूंची और मजेदार"।

रूपेश "और कितने स्वाद चखे हैं"।

मिसिज अग्रवाल "बहुत पहले चखा था देसी बरफ। पत्थर की तरह। बड़ी तकलीफ हुई थी"।

रूपेश "कम आन भौजी इतनी चटोरी चीज और स्वाद न ले"।

मिसिज अग्रवाल के चेहरे पर झेंप फैल गयी " जाओ भी तुम बहुत तेज हो। चख लेतीं हूॅ दूसरा स्वाद कभी कभी। लेकिन दो स्वाद कभी नहीं चखे। पर खाती मजे से हूॅ और खूब खाती हूॅ"।

रूपेश "हॉ मैं तो चीज देख के ही जान गया हूॅ बेमिसाल। मैने तो ऐसी कभी नहीं चखी"।

मिसिज अग्रवाल " ऐसी कितनी चखीं हैं"।

रूपेश "चख लेता हूॅ कभी कभी"।

मिसिज अग्रवाल "बहुत शॉतर हो" उसको कस के चूम लेती हैं फिर कहतीं हैं "लेकिन ये चाकलेट क्यों पिघल रही है" ।

रूपेश "ना भौजी इसमें बड़ा दमखम है।" उसने उकड़ूॅ बैठ के दूर तक लण्ड बाहर कर के घप से घुसेड़ दिया। हर बार पर उसका पेडू धप्प से खुली चूत पर पड़ने लगा। उसने दोनों हथेलियों में दोनों उभारों को भर लिया और बुरी तरह गूॅधने लगा। मिसिज अग्रवाल की उत्तेजना आने मैं देर नहीं लगी। उन्होने मोनिंग शुरू कर दी। रूपेश का लण्ड और तेजी से चूत में होने लगा।मिसिज अग्रवाल हिस्टिरिक हो चुकी थीं। उन्होंने जोरों से ब के सीने में सिर छुपा लिया। अपने दॉत ब के उभरे निपिल पर गढा दिये।

वह जोर जोर से आवाज निकाल रही थीं "हॉ हॉ लगाओ और मारो फाड़ डालो मेरी बुर को देखें कितना जोर है लौड़े में"।

रूपेश भी जवाब दे रहा था "ले और ले आज तक तुमने इटालियन आइस ही खायी है आज जम्बो चाकलेट का मजा चख"।

दोनों का बहसीपन बढता ही गया। रूपेश लगाता गया मिसिज अग्रवाल लेती गयी। रूपेश ने अॅगूठा ले जाके जैसे ही क्लीटोरि पर रखा मिसिज अग्रवाल एक्सप्लोड हो गयीं।

वह चिल्लायीं "ये लल्लाााााा ये क्याााा कियाााा ऊऊऊऊऊऊऊ मैऐ तो ःःःःः हे राम मै क्या करूरूरूॅःःःःःःः"। उनकी चूत हवा में उठ गयी। रूपेश ने उनकी कमर पकड़ के बड़ी तेजी से लण्ड चूत मैं आगे पीछे किया।

फिर वह भी चिल्लाया " लो भौजी मै। भी खलाााासस हुअअअअआाााााा" ।

loveguruwb@yahoo.com

मिसिज अग्रवाल ने हाथ से पकड़ के उसका लण्ड बाहर खींच दिया। वह उनकी चूत के ऊपर बड़ी देर तक रस उगलता रहा।

राकेश बाथरूम के दरवाजे से यह नजारा देख रहा था उत्तेजित भी थोड़ा हो रहा था।

मिसिज अग्रवाल निढाल पड़ी थीं। बोली "तुम लोग तो गजब के चोदू हो। लगता है सुनीता और रश्मि भी बड़ी चुदैल हैं।"

अपनी चूत पर हाध रखते हुये वह बोलीं "ओ मॉ ये तो भुस बन गई है हाध लगाने से दुखती है। मैं तो अब पूरी तरह सन्तुस्ठ हो गयी हूॅ। कुछ दिन इसको छेडूॅगी भी नहीं। तुम लोग फ्रैस होलो। चलो मैं तुम लोगों के लिये गरमागरम काफी बनाती हूॅ।

loveguruwb@yahoo.com

loveguruwb@yahoo.com

loveguruwb@yahoo.com

loveguruwb@yahoo.com

koi bhi haryana aur delhi ki ladki  mujse chudna chati hain to muje mail karen or sath hi apna naam , contact no, address , age ,